दैनिक

# पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 132 | ग्वालियर,22 जनवरी सोमवार 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए


## एक नजर

### अयोध्या पहुंचे राजा भैया बोले- हम कारसेवक रहे हैं...ढांचे में किए थे रामलला के दर्शन

अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन चंद घंटों बाद होगा. रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए देश भर में उत्सव का माहौल है. भक्तों को भगवान राम के दर्शन का इंतजार खत्म होने वाला है. रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी प्रधानमंत्री मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत बनेंगे. इस कार्यक्रम के लिए अयोध्या पहुंचे जनसत्ता दल प्रमुख रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राज भैया ने कहा है कि वह भी कारसेवक रह चुके हैं.जनसत्ता दल प्रमुख रघुराज प्रताप सिंह का विपक्ष पर भी बयान सामने आया है. अयोध्या पहुंचे राजा भैया ने कहा कि जिनको रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का न्योता मिला है और अयोध्या आ रहे हैं, ये उनके पूर्व जन्मों के संचित पुण्य का परिणाम है. उन्होंने निमंत्रण को अस्वीकार करने वालों को अभागा बताया. रघुराज प्रताप सिंह ने कहा कि मुझे और मेरे पिता, दोनों को राम मंदिर ट्रस्ट से न्योता दिया गया था. मगर पिता जी की उम्र ज्यादा हो गई है. सेहत की वजह से वह अयोध्या नहीं आ पाए.वहीं राजा भैया ने कारसेवकों से जुड़े सवाल पर कहा कि वह भी कारसेवक रह चुके हैं और कई बार अयोध्या आ चुके हैं. राजा भैया ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने रामलला का दर्शन ढांचे में भी किया है, फिर जब रामलला तंबू में थे तब भी उनका दर्शन किया है. बता दें कि अयोध्या नगरी राम का स्वागत करने को उत्सुक है. अयोध्या की सजावट में कोई कसर नहीं छोड़ी गई है. राम मंदिर को प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान समाप्त होने के बाद खोल दिया जाएगा. 22 जनवरी को राम की नगरी में भक्तों का हुजूम उमड़ेगा. देश विदेश से भी अतिथि श्रद्धा प्रकट करने के लिए अयोध्या पहुंचेंगे.

### 'राममय' अयोध्या, दुल्हन की तरह सजी नगरी, आज राम मंदिर में विराजेंगे रामलला

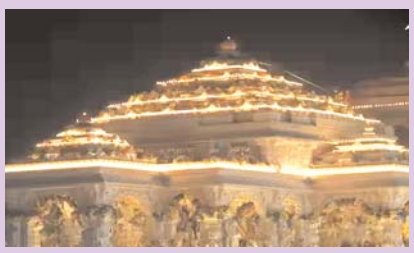

राम भक्तों को वर्षों से जिस पल का इंतजार है, उसके लिए अयोध्या पूरी तरह से तैयार है बहु-प्रतीक्षित राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन भव्य स्तर पर आज 22 जनवरी 2024, सोमवार को होगा जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सभी धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होंगे. इस समारोह के अगले दिन ही यह मंदिर जनता के लिए खोल दिया जाएगा.'प्राण प्रतिष्ठा' समारोह अपराह्न 12.20 बजे शुरू होगा और अपराह्न एक बजे तक उसके पूरा होने की संभावना है. इसके बाद प्रधानमंत्री आयोजन स्थल पर संतों और प्रतिष्ठित शख्सियतों समेत 7,000 से अधिक लोगों की सभा को संबोधित करेंगे.लाखों लोगों के इस कार्यक्रम को टेलीविजन और ऑनलाइन मंचों पर सीधा प्रसारण देखने की उम्मीद है. इसे देखते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित राज्यों और ओडिशा ने एक दिन के अवकाश की घोषणा की है जबकि केंद्र सरकार ने आधे दिन की छुट्टी का एलान किया है.इसके साथ ही देश और विदेश में इस अवसर पर विशेष उत्सव की घोषणा की गयी है वाशिंगटन डीसी से लेकर पेरिस और सिडनी तक दुनिया के विभिन्न हिस्सों में 22 जनवरी को कार्यक्रमों की घोषणा की गयी है. ये कार्यक्रम 60 देशों में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) या हिंदू प्रवासी समुदाय द्वारा आयोजित किए जा रहे हैं.भारत के विभिन्न हिस्सों से 14 दंपती 'प्राण प्रतिष्ठा' के लिए ''यजमान'' होंगे. इस समारोह के मद्देनजर अनुष्ठान 16 जनवरी को शुरू हुए थे और मंदिर न्यास के महासचिव चंपत राय के अनुसार ये अनुष्ठान 21 जनवरी को संपन्न हुए.मैसूरु के मूर्तिकार अरुण योगीराज द्वारा बनाई गई रामलला की नयी 51 इंच की मूर्ति को बृहस्पतिवार दोपहर को मंदिर के गर्भगृह में स्थापित किया गया

# यज्ञ फल से हुए थे श्रीराम, गुरु से मिला सुंदर नाम; इन खूबियों से कहलाए महान

भगवान राम के भक्तों को जिस घड़ी का बरसों से इंतज़ार था, वह आख़िरकार आ ही गई. उत्तर प्रदेश (यूपी) के अयोध्या में बने भव्य और स्थायी मंदिर में उनका 22 जनवरी, 2024 को बालरूप में आगमन हो रहा है. आइए, इस पावन मौक़े पर जानते हैं मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने वाले अवध बिहारी **भगवान रामचंद्र की कहानी**-प्रभु राम का जन्म अयोध्या के राजा दशरथ के यहां हुआ था. वह उनकी पहली पत्नी कौशल्या की इकलौती संतान थे. ऐसा कहा जाता है कि रावण के श्राप से महाराज दशरथ को बच्चे नहीं हो रहे थे जिसके बाद गुरु वशिष्ठ से सलाह लेकर उन्होंने विशेष अनुष्ठान किया. श्रृंगी ऋषि के यज्ञ के बाद अग्नि से प्रकट हुए दिव्य पुरुष ने दशरथ की तीनों पत्नियों को खीर दी और इस प्रसाद को चखने के बाद उन्हें चार पुत्र हुए जिनमें सबसे बड़े राम थे. उन्हें इस बात की पीड़ा थी कि राम ने उनकी तिथि पर जन्म क्यों नहीं लिया.

**जब आए थे भगवान तब सारे लोकों में**-दिल्ली के लक्ष्मी नगर स्थित बैंक एंक्लेव में लक्ष्मी नारायण बैकुंठ धाम मंदिर के पंडित गुरु प्रसाद द्विवेदी ने इस बारे में को फोन पर बातचीत के दौरान बताया कि वह वैवस्वत मन्वंतर में 23वें चतुर युग के त्रेता युग में हुए थे. उनका जन्म अभिजीत मुहूर्त में हुआ था. उस वक्त न अधिक सर्दी थी और न ही अधिक धूप. वह पल सारे लोकों को शांति देने वाला था. चारों ओर तब ठंडी और सुगंधित हवा चल रही थी. वन भी खिलखिला रहे थे और सारी नदियां मानो अमृत के समान बह रही थीं.

**पहले चार भुजाओं के साथ जन्मे थे** -पंडित गुरु प्रसाद द्विवेदी के मुताबिक, श्रीराम भगवान विष्णु के अवतार (सातवें) थे. यही वजह है कि इसका जिक्र मिलता है. गुरु वशिष्ठ ने यह नाम देते हुए कहा था- जो आनंद के समुद्र हैं, जो सुख के राशि हैं, जिनके एक कण से तीन लोक सुखी हो जाते हैं, जो लोकों को आनंद देने वाले हों और जो सुख के धाम हैं...उनका नाम राम है.

**कैसा था भगवान राम का बचपन**-पंडित गुरु प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, श्रीराम जब छोटे थे तब वह ठुमक-ठुमक कर चलते थे. मिट्टी में खेलने के दौरान वह खुद को गंदा कर लिया लेते थे मगर प्यार-दुलार में पिता और चक्रवर्ती सम्राट दशरथ उन्हें फिर भी पृथ्वी पर बुराई और अत्याचार का नाश करने के लिए कौशल्या के यहां पहले वह नारायण स्वरूप में जन्मे. पीतांबर (पीले) वस्त्रों में तब उनकी चार भुजाएं (हाथ) और पूरा तन नीला नजर आ रहा था. वह उस दौरान मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे. कौशल्या उनका यह स्वरूप देख प्रार्थना करते हुए बोलीं, ÷हे भगवन! मुझे तो आप बाल स्वरूप में चाहिए थे. आप कृपया उसी रूप में आएं.÷ इस गुजारिश के बाद भगवान शिशु रूप में आए और जोर-जोर से रोने लगे. रुदन के बाद जब दशरथ तक यह खबर पहुंची तो उन्हें ब्रह्मानंद (बहुत खुश होना) की प्राप्ति हुई.इक्ष्वाकु कुल के रघुवंश और सूर्यवंश से नाता रखने वाले श्रीराम का विवस्वान गोत्र था. उन्हें राम नाम पिता के गुरु वशिष्ठ से मिला था. रामचरितमानस में भी गले लगाकर खेलते थे. राम थोड़ा बड़े हुए तो अनुशासित रहने लगे. वह सबसे पहले जाकर माता-पिता और गुरु को प्रणाम कर चरण स्पर्श करते थे. खुद को मिलाकर चारों भाइयों (लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न) में वह सबसे मर्यादित और समझदार थे. उनमें सर्वोत्तम गुण यह था कि वह किसी में कोई दोष नहीं देखते थे.

**13 साल में विवाह, फिर 14 साल का वनवास**-यह भी माना जाता है कि 13 साल की उम्र में भगवान राम का सीता से ब्याह हो गया था. स्वंवर में धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ाकर उन्होंने उसे तोड़ा था और फिर माता-पिता की आज्ञा के बाद विवाह किया था. वाल्मीकि रामायण में उनके 14 साल के वनवास से जुड़ा जिक्र भी है. सौतेली मां कैकेयी चाहती थीं कि उनके पुत्र भरत पिता के बाद अयोध्या का राजपाट संभालें. यही वजह थी कि दासी मंथरा ने कैकेयी (राजा दशरथ की दूसरी पत्नी) को राम के लिए 14 साल के वनवास का सुझाव दिया था.

**14 साल का वनवास ही क्यों**-दरअसल, राम को 14 साल के वनवास पर भेजने के पीछे दो प्रमुख कारण बताए जाते हैं. पहला तर्क है-उस समय के राजकीय नियम के मुताबिक राजा 14 साल तक राजपाट से दूर रहे तो वह हमेशा के लिए अधिकार खो देता था, जबकि दूसरा तर्क था- दशरथ ने 14 दिन में राम को राजा बनाने का निर्णय लिया था. इन 14 दिनों को नाराज कैकेयी स्वयं के लिए 14 साल के बराबर मानती थीं. ऐसे में उन्होंने 14 दिन के बदले राम के लिए 14 बरस के वनवास की मांग रखी थी.

**7 फुट लंबे थे राम, धनुष का यह था नाम**-वनवास काल में राम जी ने कई ऋषि-मुनियों से शिक्षा और विद्या ली थी. चूंकि, इस दौरान उन्हें किसी भी गांव या जगह रहने और जंगल में जीवन बिताने की अनुमति नहीं थी। ऐसे में वह देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण करते रहे. नारायण के अवतार होने के कारण वह श्याम वर्ण के थे. लगभग सात फुट लंबे श्रीराम के पास तब कोदण्ड नाम का धनुष रहता था. यही उनका प्रमुख शस्त्र था जिसे वह धर्म की रक्षा के लिए इस्तेमाल करते थे. राम 14 साल का वनवास खत्म करने के बाद सबसे पहले कैकेयी से मिले थे और तब भगवान के मन में उनके लिए सिर्फ करुणा थी. राम को तब जरा भी पीड़ा न थी कि कैकेयी के चलते उन्हें 14 साल वन में काटने पड़े.

**उपहार में खुद को सौंप दिया था**-वनवास से अयोध्या लौटने पर राज दरबार में राम-सीता को सब लोग उपहार दे रहे थे. विभीषण ने सीता को रत्न जड़ित हार (रावण से भेंट में मिला था) दिया. मां सीता से यह हार हनुमान को भेंट में मिला जिसे पवनपुत्र ने तोड़ दिया और दांत से एक-एक मोती काटने लगे. जब पूछा गया तो उन्होंने बताया, ÷मैं ये मोती तोड़ कर यह देखना चाहता था कि इनमें मेरे राम और सीता बसे हैं या नहीं? मुझे इनमें वे नहीं मिले इसलिए कंकड़-पत्थर मानकर मैंने इन्हें तोड़ दिया.÷ बाद में मारुति नंदन से विभीषण और लक्ष्मण समेत कई लोगों ने पूछा, ÷आपके शरीर में भी तो कहीं राम और सीता नहीं हैं.

# नाराज फूफा-चाचा. प्राण प्रतिष्ठा में न जाने वाले नेताओं पर बरसीं कंगना, कहा- राम तो कब का आ जाते

अयोध्या में कल यानी 22 जनवरी को रामलला प्राण प्रतिष्ठा होने जा रहा है. इस मौके पर देशभर से राम भक्त अयोध्या पहुंच रहे हैं. इस लिस्ट में राजनेताओं से लेकर फिल्मी सितारों तक कई सेलिब्रिटीज का नाम शामिल है. बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत भी अयोध्या पहुंच चुकी हैं. इस दौरान कंगना रनौत ने मीडिया से खुलकर बाचतीत भी की. कंगना ने उन विपक्ष नेताओं पर ताना कसा जो राम मंदिर का विरोध करने के साथ ही अयोध्या रामलला प्राण प्रतिष्ठा में नहीं पहुंचे. हमेशा की तरह कंगना ने बेबाकी के साथ मीडिया से बात की और अपने विचार रखे. कंगना रनौत ने उन लोगों की तुलना नाराज फूफा-चाचा से करते हुए मजेदार बयान दिया है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत बीजेपी के लगभग सभी नेता अयोध्या प्राण प्रतिष्ठा में पहुंच चुके हैं. इनके अलावा कई विपक्षी नेता हैं जो इस समारोह में अयोध्या नहीं गए हैं. जब मीडिया ने कंगना रनौत से इसके बारे में बात की तो कंगना हमेशा की तरह बेबाकी के साथ उनके सवालों का जवाब देती हैं. चलिए आपको बताते हैं कि कंगना रनौत ने अयोध्या ना पहुंचने वालों के बारे में क्या कहा है?

**प्राण प्रतिष्ठा में न जाने वाले नेताओं पर बरसीं कंगना**-एक ट्वीट किया है जिसमें कंगना रनौत मीडिया से बातचीत कर रही हैं. इस दौरान उन्होंने प्राण प्रतिष्ठा में न जाने वाले नेताओं पर कुछ टिप्पणी भी की. ट्वीट के मुताबिक, अयोध्या-एक्ट्रेस कंगना रनौत कहती हैं- अयोध्या दुल्हन की तरह सज चुकी है. भजन और यज्ञ हर जगह हो रहा है. ऐसा लग रहा है कि हम देव लोक पहुंच गए हैं. हम कुछ नहीं कह सकते हैं उन लोगों के बारे में जो यहां नहीं आए. इस समय अयोध्या में पहुंच कर बहुत अच्छा फील हो रहा है.वीडियो में कंगना रनौत मीडिया से बातचीत के दौरान प्राण प्रतिष्ठा में न पहुंचने वाले नेताओं पर भड़कती नजर आईं. कंगना कहती हैं,आप सब यहां हैं और आप सभी साक्षी हैं कि अयोध्या दुल्हन की तरह सज गई है. हर जगह फूलों की मालाएं लग रही हैं, फूलों का डेकोरेशन हो रहा है. इसपर मीडिया से कोई पूछता है कि राहुल गांधी नहीं आ रहे हैं, उनकी बात करें या समाजवादी पार्टी की बात करें जिनके नेता भी नहीं आ रहे हैं तो आप इसपर क्या कहती हैं. कंगना ने कहा, देखिए उन लोगों के बस की होती तो राम मंदिर कब का बन गया होता. उनके लोगों के बस की नहीं है तो राम अब आ रहे हैं. हमारे लिए ये राममय होने क वक्त है. जिनको नहीं आना है वो कहते हैं ना शादी में चाचा-फूफा नाराज हो जाते हैं तो वो वैसे बनकर रहे तो क्या कहें.जानकारी के लिए बता दें, कंगना रनौत के अलावा अयोध्या रामलला प्राण प्रतिष्ठा में अनुपम खेर, भूषण कुमार, अरुण गोविल, दीपिका चिखलिया, सुनील लहरी जैसे सेलिब्रिटीज पहुंच चुके हैं. वहीं विराट कोहली, अनुष्का शर्मा, माधुरी दीक्षित, जैकी श्रॉफ जैसे कई सेलिब्रिटीज अयोध्या राम मंदिर के उद्घाटन के दौरान पहुंच सकते हैं.

## कारसेवकों को परिवार सहित अयोध्या में रामलला के दर्शन कराएगी मोहन यादव सरकार, वीडी शर्मा ने किया एलान

भारतीय जनता पार्टी की मध्य प्रदेश इकाई राज्य के सभी कारसेवकों को परिवार सहित अयोध्या में रामलला के दर्शन कराएगी. बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने भोपाल के कोलार के पास ग्राम थुआखेड़ा में कारसेवक अचल सिंह का सम्मान करते हुए कहा कि साल 1992 में अयोध्या में भगवान राम के जन्मस्थान पर बने ढांचे को मिटाने का कार्य कारसेवकों ने किया था.वीडी शर्मा ने कहा, ÷कारसेवकों ने कहा था कि मंदिर वहीं बनाएंगे, आज उसी स्थान पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार 22 जनवरी को अयोध्या के भव्य श्रीराम मंदिर में श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा करने जा रहे हैं और इसके साथ कारसेवकों का संकल्प भी पूरा होने जा रहा है.÷

# देश के स्वाभिमान की पुनर्स्थापना है रामलला की प्राण प्रतिष्ठा, राम मंदिर पर बोले सीएम मोहन यादव

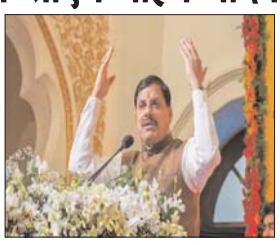

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होनी है, जिसको लेकर पूरे देश में उत्सव का माहौल है. प्राण प्रतिष्ठा को लेकर राम भक्तों में उत्साह का माहौल है. लंबे समय के इंतजार के बाद सोमवार यानी कल (22 जनवरी) को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा शुभ संयोग में होने वाली है. प्राण प्रतिष्ठा से पहले मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी राम मंदिर को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दिए हैं. उन्होंने राम मंदिर को लेकर कहा है कि आज सौभाग्य का पावन अवसर है.सीएम मोहन यादव ने कहा कि सैकड़ों वर्षों बाद यह शुभ घड़ी आई है. अयोध्या में अपने जन्मस्थान पर रामलला विराजमान हो रहे हैं. पूरा संसार राममय हो चुका है. हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमें यह सुखद दृश्य देखने का अवसर मिला है. श्री राम की गरिमा के अनुरूप मंदिर निर्माण के लिये पीढ़ियों ने पांच सौ वर्ष तक संघर्ष किया इसमें अनगिनत बलिदान हुए. राम मंदिर हमारी संस्कृति, हमारी आस्था, राष्ट्रीयत्व और सामूहिक शक्ति का प्रतीक है. यह सनातन समाज के संकल्प, संघर्ष और जिजीविषा का ही परिणाम है कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्रीराम मंदिर निर्माण का सपना साकार हो रहा है. यह उमंग और उत्सव का अवसर है, समूचा समाजउल्लास के साथ खुशियां मना रहा है.

**सीएम मोहन यादव ने की श्री राम की तारीफ**-सीएम मोहन यादव ने कहा कि राजा राम प्रत्येक भारतीय और विश्व में व्याप्त सनातनियों के आदर्श हैं. वे सत्यनिष्ठा के प्रतीक, सदाचरण और आदर्श पुरुष के साकार रूप मर्यादा पुरुषोत्तम हैं. श्रीराम जन्मस्थान मंदिर निर्माण के हर्षोल्लास के साथ हमें भगवान राम के जीवन से प्रेरणा भी लेनी चाहिए. कर्तव्यपथ पर प्रतिबद्ध श्रीराम के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे सबके थे और सबको साथ लेकर चलते थे. सबका विश्वास अर्जित करने के लिए अपने सुखों का भी त्याग कर देते थे. वे जितने वीर थे, मेधावी थे उतने ही सहनशील भी. उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और विपरीत परिस्थिति कभी उन्हें विचलित नहीं कर सकती थीं. उन्होंने आगे कहा कि प्रजावत्सल राजा राम के लिये न्याय और राजधर्म सर्वोपरि था. इन्हीं अद्भुत विशिष्टताओं के कारण श्रीराम को आदर्श राजा कहा जाता है. उनकी राज व्यवस्था में न कोई छोटा था न कोई बड़ा था, सभी समान सम्मान के अधिकारी थे. सबको उनकी योग्यता, क्षमता और मेधा के अनुसार काम के अवसर प्राप्त थे. भेदभाव रहित समाज व्यवस्था के लिए रामराज्य का उदाहरण दिया जाता है. रामराज्य में प्रजा की सुखद स्थिति का रामचरित मानस के उत्तरकांड में उल्लेख है- ÷दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा.÷ अर्थात् रामराज्य में शासन व्यवस्था इतनी आदर्श थी कि प्रजा समृद्ध, रोग रहित और आपदा रहित थी.

**प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर दीप जलाने की तैयारी शुरू**-राष्ट्र के सांस्कृतिक एकत्व के लिए श्री राम जी ने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया. वे अपना वनवासकाल पूर्ण करके लंका से सीधे अयोध्या नहीं आये. वे उन सभी स्थानों पर गये जो उनका वन गमन मार्ग था. लौटते समय निषाद, किरात, केवट और वनवासी समाज के सभी प्रमुख बंधुओं को अपने साथ लाये थे.

# असम में बढ़ा भारत जोड़ो न्याय यात्रा का विरोध, लोगों ने लगाए राहुल गांधी गो बैक के नारे, पहले रुकवा दी थी बस

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान रविवार (21 जनवरी) को असम के नागांव क्षेत्र के अंबागन इलाके में एक भीड़ ने घेर लिया और विरोध प्रदर्शन किया. भीड़ में मौजूद लोगों के हाथों में पोस्टर थे, जिनपर राहुल गांधी गोबैकऔर अन्याय यात्रा लिखा था. यह घटना रविवार को शाम के समय हुई.इस घटना का वीडियो न्यूज एजेंसी एएनआई ने जारी किया है. वीडियो में देखा जा सकता है सुरक्षाकर्मी राहुल गांधी को भीड़ से सुरक्षित निकालकर ले जा रहे हैं. वीडियो में भीड़ को नारेबाजी करते भी सुना जा सकता है.

**इससे पहले रोकनी पड़ी थी बस**-इससे पहले राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की बस को भीड़ ने रोक लिया था. न्यूज एजेंसी एएनआई की ओर से जारी एक वीडियो में राहुल गांधी को भारत जोड़ो यात्रा की बस से उतरकर बीजेपी के झंडे लिए लोगों की भीड़ की ओर बढ़ते देखा जा सकता है. हालांकि, जैसे ही कांग्रेस सांसद बस से उतरे उन्हें सुरक्षाकर्मी और पार्टी कार्यकर्ता वापस बस के अंदर ले गए.

**भीड़ ने लगाए मोदी-मोदी के नारे**-कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने

अपने एक्स (पहले ट्विटर) पर एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें कुछ लोग सड़कों पर हाथों में बीजेपी का झंडा लिए खड़े नजर आ रहे हैं. जैसे ही राहुल गांधी उन लोगों के पास पहुंचे तभी वहां खड़े लोगों ने जय श्रीराम और मोदी मोदी के नारे लगाने शुरू कर दिए.

**बीजेपी कार्यकर्ताओं पर लगाया हमले का आरोप**-वहीं, कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान असम के जुमुगुरीहाट में बीजेपी कार्यकर्ताओं ने उनके वाहन पर हमला किया. असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा पर कथित हमले की साजिश रचने का आरोप लगाते हुए जयराम रमेश ने दावा किया कि उन्होंने अपना संयम बनाए रखा.

**हिमंत बस्वा सरमा ने दी प्रतिक्रिया**-वहीं, इस संबंध में असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने ट्वीट किया, ÷ रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की पूर्व संध्या पर राम भक्तों को जय श्री राम का नारा लगाने का पूरा अधिकार है. राहुल गांधी को अपना आपा नहीं खोना चाहिए और उन्हें जय श्रीराम के नारे से एलर्जी नहीं होनी चाहिए. इस तरह से हिंसा मत भड़काओ और न ही जनता को धमकाओ.÷

## आवश्यक सूचना

**संदीप प्रधान उप संपादक दैनिक पुष्पांजलि**

**टुडेदतिया कलेक्टर श्री संदीप माकिन ने निर्देश दिए है की सोशल मीडिया पर कोई भी भ्रामक खबर फैलाने वाले पर एफआईआर दर्ज कर जेल भेजने की कार्रवाई की जाएगी ,सभी जिले वासियों और पत्रकार बंधुओ से अनुरोध है । किसी भी प्रकार की भ्रामक खबर सोशल मीडिया पर जारी न करें**

# नेशनल हाईवे पर लोडिंग गाड़ी ने तीन वाहनों में मारी टक्कर, आधा दर्जन लोग हुए

**दैनिक पुष्पांजली टुडे**
**मालनपुर**

मालनपुर, थाना क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम गुरीखा मोड़ से आगे सिद्धि विनायक पेट्रोल पंप के पास नेशनल हाईवे 719 पर बीती रात घने कोहरे के चलते छोटा हाथी के चालक की तेजी और लापरवाही में पहले एक मोटरसाइकिल में टक्कर मारी फिर सामने आ रही दो करो मैं टक्कर मारने से कई लोग घायल हुए। जिस कारण यह घटना घटित हुई , जिसमे एक लोडिंग मैजिक बाहन( छोटा हाथी) के चालक ने लापरवाही से चलते हुए पहले एक मोटरसाइकिल में टक्कर मार दी फिर उसके बाद दो मारुति की कारों में, जिसमें कुल 6 लोग घायल हुए,पुलिस जवानों ने तात्पर्यता दिखाते हुए , सभी घायल मरीजों को 108 इमरजेंसी एंबुलेंस के द्वारा जल्दी पहुंचवाया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोहद,जानकारी के अनुसार घटना शनिवार शाम की है भिण्ड की तरफ से आते हुए एक मैजिक वाहन छोटा हाथी ने ग्वालियर की तरफ से आते हुए प्राइवेट बैंक में फाइनेंसर रामेंद्र पिता रामनारायण

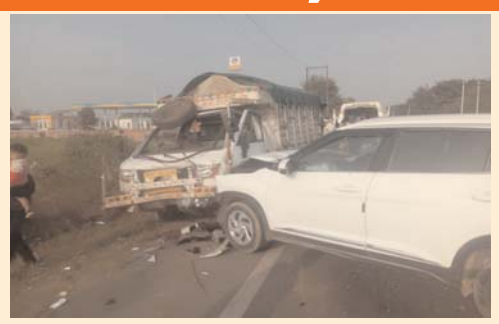

सिंह उम्र 30साल निवासी मेला प्रांगण के पीछे मुरार, अपने मित्र गौरव पिता रामनिवास भदौरिया उम्र 35 साल निवासी मेला ग्राउंड के पीछे मुरार के साथ, अपनी निजी मोटरसाइकिल से किसी से मिलने गोहद जा रहे थे तभी अचानक सामने से आते हुए ऐक मैजिक वाहन के ड्राइवर ने लापरवाही पूर्वक चलाते हुए रविंद्र की मोटरसाइकिल में जोरदार टक्कर मार दी जिसके कारण वह सड़क पर गिर पड़ा और उनके दाहिने हाथ में चोट आई और उनके दोस्त गौरव की दाहिने पैर की हड्डी टूट गई जिस कारण दोनों को काफी गंभीर चोट आई मैजिक वाहन चालक ने सामने से आई हुई मारुति की एक कर जिसमें रामनिवास पिता गणेश राम अपने मित्र के साथ सोंधा गांव में किसी के फेर में जा रहे थे उनकी मारुति कार में भी टक्कर मार दी जिस कारण रामनिवास को भी हल्की-फुल्की चोटें आई, दूसरी अन्य कार में अतुल कालंगाबकर पिता सुधाकर कालगांवकर उम्र 45साल निवासी लस्कर ग्वालियर की गाड़ी में भी टक्कर मार दी इनकी

कमर और छाती में भी काफी गंभीर चोटें आई, साथ ही छोटा हाथी मैजिक में बैठी सवारी संगीता पति सोनू उम्र 42 साल निवासी पिंटू पार्क ग्वालियर को भी काफी गंभीर चोटें आईद्य, जिस कारण रोड पर अपराध तकरीर मच गई, और यातायात भी प्रभावित होने लगा मगर मालनपुर थाना पुलिस के जवानों ने समय रहते घटनास्थल पर पहुंचकर सभी घायलों की काफी मदद की तथा यातायात भी अवरुद्ध नहीं होने दिया, साथ ही 108 इमरजेंसी एंबुलेंस पर फोन लगाकर सभी घायलों को समय पर सही इलाज मिल सके इसके लिए 108 पर फोन लगाकर सूचना दी, तीन चार गाड़ियों की टक्कर होने के कारण रोड पर अफरा तफरी का माहौल हो गया था लेकिन पुलिस जवानों ने तात्पर्यता दिखाते हुए दिखाते हुए यातायात को प्रभावित नहीं होने दिया, इधर सूचना मिलते ही मालनपुर थाना 108 इमरजेंसी एंबुलेंस के पायलेट मुरारी लाल गोस्वामी अपने साथी ईएमटी विनय कुमार के साथ शीघ्र घटना स्थल पर पहुंचे, और सभी घायल मरीजों को शीघ्र एंबुलेंस में बिठाकर समुदायक स्वास्थ्य केंद्र गोहद पहुंचा, प्राथमिक उपचार के बाद, गौरव को पैर की हड्डी टूटने के कारण, और अतुल की पसलियों और कमर में चोट होने के कारण दोनों की गंभीर अवस्था को देखते हुए , शीघ्र ग्वालियर मेडिकल कॉलेज ग्वालियर के लिए 108 इमरजेंसी एंबुलेंस पर फोन लगाकर रेफर की सूचना दी, वही मौके पर खड़ी मालनपुर थाना 108 एमरजैंसी एम्बुलेंस को सूचना मिलते ही पायलट मॉडल गोस्वामी ने तुरंत सभी घायलों को शीघ्र ग्वालियर मेडिकल कॉलेज ले जाकर भर्ती करवा कर इलाज चालू करवाया जिससे समय रहते सभी घायलों को उचित इलाज मिल सके लगातार एक ही जगह मैजिक लोडिंग गाड़ी चालक ने एक मोटरसाइकिल दो करें स्वयं की गाड़ी से टक्कर मारी जिससे रोड पर अफरा तफरी मच गई रात्रि में आवागमन प्रतिबिंब ना बने तत्काल नेशनल हाईवे से रोड पर वाहनों को हटाया गया मुकदमा दर्ज कर जांच में लिया गया।

# विकसित भारत संकल्प यात्रा का लक्ष्य केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाना है

**विवेक राय की रिपोर्ट**

टीकमगढ़। टीकमगढ़ जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत ककरवाहा में विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान कार्यक्रम का शुभारंभ गोविंद सोनी भारतीय जनता पार्टी के मंडल उपाध्यक्ष अतिथियों के साथ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर तथा दीप प्रज्जवलित किया एवं शासकीय हाई स्कूल ककरवाहा द्वारा छोटा सा सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया इस अवसर पर अनिल प्रताप लोधी जिला पंचायत सदस्य अंशुल व्यास जिला उपाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी सुनील रैकवार मंडल महामंत्री आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और स्वास्थ्य विभाग राजस्व विभाग के साथ इंजीनियर नीशू जैन रोजगार सहायक मुकेश राय सरपंच भागीरथ बुनकर विक्रम सिंह बुंदेला ऋषभ जैन सत्यव्रत सिंह बुंदेला लाखन सिंह लोधी सुनील योगी स्वामी सोनी मेहरबान खंगार सुरेश राय पर्वत राय दीपक खंगार रमेश प्रजापति राहुल जैन परमु रजक

समस्त अधिकारी कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुये गोविंद सोनी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बिकसित भारत संकल्प यात्रा देश में निकाली जा रही है विकसित भारत संकल्प यात्रा का लक्ष्य केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा जनकल्याणकारी योजनायें संचालित हो रही है। इन देशव्यापी योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाने विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है। उन्होंने कहा कि योजनाओं के लाभ से वंचित पात्र हितग्राही इस अवसर का लाभ उठायें। उन्होंने अतिथियों के साथ नवीन चिन्हित लाभार्थियों को योजनाओं के लाभ पत्रों का वितरण भी किया। शिविर में शासन की योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों ने अपने अनुभव मेरी कहानी मेरी जुबानी सुनाई और अपने अनुभव साझा किये। साथ ही विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान आईईसी मोबाइल बैन के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संदेश योजनाओं की जानकारी और योजनाओं से संबंधित चलचित्र प्रदर्शित किये गये।

**सिटी कोतवाली पुलिस द्वारा अवैध पिस्टल तस्करो को किया गिरफ्तार**

# ए एसपी संजीव पाठक ने प्रेस वार्ता में दी जानकारी,सीएसपी अरुण कुमार मौजूद रहे आरोपियों से पांच पिस्टल,दो राउण्ड व मो.सा. जप्त

**पंकज त्रिपाठी**
**दैनिक पुष्पांजली टुडे**

**भिण्ड ।** पुलिस अधीक्षक डॉ. असित यादव एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव पाठक के निर्देशन में एवं नगर पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार उईके के मार्गदर्शन में अवैध हथियार क्रय - विक्रय करने वाले बदमाशो पर कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया था।पुलिस कंट्रोल रूम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव पाठक ने प्रेस कांफ्रेंस कर उक्त प्रकरण की जानकारी दी,वार्ता में सीएसपी अरुण कुमार उईके,सिटी कोतवाली निरीक्षक प्रवीण सिंह चौहान व उनकी टीम एवं सायबर सेल टीम के सदस्य मौजूद रहे।वरिष्ठ अधिकारियों से प्राप्त निर्देशन मे सिटी कोतवाली निरीक्षक प्रवीण सिंह चौहान द्वारा टीम बनाई गई जिसके द्वारा दो आरोपियों को अवैध पिस्टल विक्रय करते हेतु गिरफ्तार किया गया । उक्त आरोपियों के कब्जे से पांच पिस्टल व दो जिन्दा राउण्ड एवं एक मोटरसाइकिल जप्त कर आरोपीगणों को गिरफ्तार किया गया। दिनांक 21/01/2024 को मुखबिर की

सूचना प्राप्त हुई कि निराला रंग विहार के पास मेला ग्राउण्ड भिण्ड मे दो व्यक्ति अवैध हथियार बेचने के लिये खडे है,उक्त सूचना पर मुखबिर के बताये स्थान पर पहुचे जहां पर दो व्यक्ति दिखे जिन्हे चैक किया तो मोटरसाइकिल चालक के पास कमर में एक 32 बोर की पिस्टल लोडेड अवस्था में मिली एवं पीछे बैठे व्यक्ति की कमर मे एक 32 बोर की पिस्टल लोडेड अवस्था में मिली एवं पीछे बैठे व्यक्ति जो पिट्ठू बैग टांगे था जिसको चैक किया उसके बैग मे तीन 32 बोर की पिस्टल मिली जिसके संबध मे उक्त लोगों से वैध लाइसेंस चाहा तो अपने पास लाइसेंस नही होना बताया । आरोपीगण का जुर्म धारा 25(1)(ए) (ए) आर्म्स एक्ट का पाया जाने से मौके पर दोनो आरोपियो के कब्जे से प्रथक प्रथक कुल पांच 32 बोर की देशी पिस्टल व दो 32 बोर के जिन्दा राउण्ड व एक बिना नंबर की सफेद रंग की अपाचे मोटरसाइलिक जप्त की।जप्त माल की कुल कीमत करीबन 2,60,600 रुपये बताई गई है। आरोपीगण के विरुद्ध अपराध क्रमांक 38/24 धारा 25 (1) (ए) (ए) आर्म्स एक्ट का कायम कर विवेचना में लिया गया।

उल्लेखनीय कार्य में निरीक्षक प्रवीण सिंह चौहान,उपनिरीक्षक सुधाकर सिंह तोमर, देवीदीन अनुरागी, एएसआई दीपक सिंह तोमर,प्रधान आरक्षक जितेन्द्र सिंह,रवि सिंह जादौन,कुल्दीप शुक्ला, आरक्षक सौरभ शर्मा,अभिषेक यादव,गिर्राज यादव की सराहनीय भूमिका रही है ।

# राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी के आज के कार्यक्रम

**पुष्पांजलि टुडे**
**राजेश कुमार तिवारी**
**ब्यूरो चीफ सतना**

सतना /प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी सोमवार 22 जनवरी को विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगी। निर्धारित कार्यक्रमानुसार राज्यमंत्री श्रीमती बागरी प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक विधानसभा कार्यालय रैगांव में जनता दरबार, दोपहर 11:15 बजे सतना में व्यंकटेश मंदिर में सुंदरकांड पाठ कार्यक्रम, दोपहर 12 बजे जिला अस्पताल सतना में श्रीराम की महाआरती, दोपहर 12:30 बजे नागौद विकासखंड के ग्राम कोटा और दोपहर 2:30 बजे ग्राम पंचायत आमा में विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल होंगी। राज्यमंत्री इसी रात्रि 9 बजे रेवांचल एक्सप्रेस से भोपाल जायेंगी।

# जैतवारा नगर परिषद अध्यक्ष रेनू डोहर उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला से मुलाकात कर जैतवारा नगर परिषद के लिए मांगा विशेष निधि

**पुष्पांजलि टुडे**
**राजेश कुमार तिवारी**
**ब्यूरो चीफ सतना**

**जैतवारा नगर परिषद अध्यक्ष रेनू डोहर ने जैतवारा के विकाश बाईपास एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सी सी रोड स्ट्रीट लाइट नाली निर्माण कार्य के लिए उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला जी से 2 करोड़ की राशि की माग**

# फोस्टा ने मार्केट में ध्वज आमंत्रण पत्रिका पीले चावल बांटे

**दैनिक पुष्पाजंली टुडे**

सूरत। भगवान श्रीरामजी के मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में 13 जनवरी को फोस्टा द्वारा सूरत के कपड़ा मार्केटो को आमंत्रण पत्रिका एवं मार्केटो में लगाने के लिए ध्वज दिये गए। जिसमें सूरत टेक्सटाइल मार्केट से मिलेनियम मार्केट और आदर्श 1 मार्केट में जाकर फोस्टा के अध्यक्ष कैलाश हाकिम, कोषाध्यक्ष नानालाल राठौड़ एवम् साथ में फोस्टा डायरेक्टर निमंत्रण देने के लिए आदर्श-1 मार्केट के अध्यक्ष एवं फोस्टा के उपाध्यक्ष रामलाल सीरवी व आदर्श मार्केट के सचिव हेमंत बागरेचा और मार्केट के सदस्यगण को श्रीराम ध्वज, और आमंत्रण पत्रिका, पीले चावल बांटे। फोस्टा अध्यक्ष कैलाश हाकिम ने सभी से निवेदन किया है की हमे भगवान प्रभु श्रीरामजी के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के इस महा अभियान का हिस्सा बन पूरा कपड़ा बाजार राम मय बने । फोस्टा द्वारा सूरत शहर के सभी कपड़ा मार्केट में बड़ी एवम छोटी ध्वजा भेजी जाएगी। साथ ही समग्र कपड़ा मार्केट एरिया में करीब 5000 ध्वज फोस्टा टीम द्वारा लगाए जायेंगे ।

# आमजनों की समस्याओं से रुबरु हुईं राज्यमंत्री

**पुष्पांजलि तुड़े**
**राजेश कुमार तिवारी**
**ब्यूरो चीफ सतना**

सतना 21 /नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी रविवार को सर्किट हाउस सतना में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी द्वारा कुछ समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए। इसके उपरांत राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने कलेक्ट्रेट परिसर में स्थित मंदिर में राम चरित मानस का शुभारंभ दीप प्रज्वलित करके किया गया। ततपश्चात ग्राम पंचायत नोनगरा एवं पनगरा में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा में कन्या पूजन कर सम्मलित हुई।

# राम आराध्य हैं...राष्ट्र आराधन

सीहोर। राम देश के आराध्य हैं लेकिन देश या राष्ट्र उसकी आराधना है। शालाओं में केवल शिक्षा दी जाती है लेकिन सेंट मेरी रेसिडेंशियल हायर सेकेंडरी स्कूल में संस्कार भी दिए जा रहे हैं। उक्त उद्गार रामायण केंद्र सीहोर इकाई द्वारा आयोजित राम मंदिर के पुजारियों के सम्मान समारोह में राठौर समाज गंज राम मंदिर के पुरोहित पंडित वासुदेव शर्मा ने व्यक किए। इस अवसर पर कार्यक्रम को आचार्य पंडित अनिल शास्त्री जी द्वारा भी संबोधित किया गया। कार्यक्रम में राम मंदिर मंडी के पुजारी और कथावाचक बाबूदास वैरागी सहित सीताराम आश्रय गोतीर्थ के बटुक पुजारियों सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के पुजारी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में राम भक्ति भजन का गायन हरिओम शर्मा दाऊ ने किया और साहित्यकार आकाश माथुर एवम बाल संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रदीप चौहान ने संबोधित किया। पुजारियों का सम्मान रामायण केंद्र के संतोष जैन संतु, आनंद भैया गांधी, हिंदू उत्सव समिति अध्यक्ष आशीष गुप्ता, राजेंद्र नागर , जितेंद्र राठौर ने किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक शैलेश तिवारी और आभार प्रदर्शन जयंत शाह ने किया। मौके पर सेंट मेरी स्कूल के संचालक मनीष तिवारी ने पुजारियों और रामायण केंद्र के सदस्यों का स्वागत किया। छात्रों के बीच इस तरह के कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाने का आग्रह प्राचार्य बाबू एंटोनी द्वारा किया गया। राष्ट्र भक्ति और राम भक्ति के गीतों को छात्रों द्वारा भी गाया गया।

# अयोध्या श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर में नचनौरा राम मंदिर में श्री राम चरित मानस पाठ का हो रहा आयोजन

**पुष्पांजलि टुडे**
**राजेश कुमार तिवारी**
**ब्यूरो चीफ सतना**

सतना जिले के नचनौरा राम मंदिर में राम लला के प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर राम मंदिर नचनौरा में मंदिर को भव्य रूप से सजाया गया है और राम मंदिर में श्री राम चरित मानस पाठ का आयोजन किया गया है

# जिला शिवपुरी की तहसील पोहरी के ग्राम ऐंसवाया में दिनांक 21/01/2024 को संत रामपाल जी महाराज जी का सतसंग सम्पन्न हुआ।

जिसमें संत रामपाल जी महाराज ने बताया कि मानव जीवन का मूल उद्देश्य भगवान की प्राप्ति कर मोक्ष पाना होता है उन्होंने बताया कि पवित्र गीता अ.9 के श्लोक 23,24 में कहा है कि जो व्यक्ति अन्य देवी देवताओं को पूजते हैं वे भी मेरी (काल ब्रह ) की पूजा ही कर रहे हैं परन्तु उनकी यह पूजा शास्त्र विरुद्ध है और आगे बताया गीता अध्याय 9 के श्लोक 25 में कहा है कि देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं अर्थात भूत बन जाते हैं शास्त्र विधि से भक्ति करने के लिए पढ़ें पुस्तक ज्ञान गंगा। उनसे निशुल्क नाम दीक्षा लेने के लिए मिसकोल करें 8193819381 पर।संत रामपालजी महाराज जी के शिष्य सुघरसिंह दास,सोनू दास, रघुवीर दास, लवलेश दास, दीप्ति दासी और सर्व संगत मौजूद रहीजीव हमारी जाति है मानव धर्म हमारा।हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।

# उप मुख्यमंत्री ने नगर निगमों सहित 28 निकायों के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समीक्षा की

## शहर को साफ और सुन्दर रखना हम सबकी जिम्मेदारी है - उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

**रीवा(पुष्पांजली टुडे )।**
कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य तथा चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने दो नगर निगमों एवं 28 नगरीय निकायों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समीक्षा की। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि शहर को साफ और सुन्दर रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। कचरे का हर घर से प्रतिदिन संकलन होना अनिवार्य है। नगरीय निकाय घर-घर से कचरा संग्रहण की व्यवस्था कर उसे ट्रांसफर स्टेशन में पहुंचाये। रेमकी कंपनी सभी नगरीय निकायों में ट्रासफर स्टेशन बनाकर वहा कचरे के पृथक्करण की व्यवस्था करायें। साथ ही कचरे का समय पर उठाव करके उसे बिजली बनाने के लिए पहड़िया के बेस्ट टू एनर्जी प्लांट लेकर जाय। शहरों के कचरे का 10 फरवरी तक शत-प्रतिशत उठाव करा दें। इसके लिए अतिरिक्त वाहन तैनात करें। बैठक में रीवा नगर निगम के महापौर श्री अजय मिश्र बाबा ने कहा कि नगरीय निकाय और रेमकी कंपनी की बीच की कठिनाइयाँ दूर की जायेंगी। कंपनी कचरे के तत्काल उठाव की पहल करें। लंबित बिलों के भुगतान के लिए समिति गठित कर दी गयी है। समिति की अनुशंसा के बाद बिलों का भुगतान नगरीय निकाय करेंगे। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे क्षेत्र को कचरे से मुक्त बनाने और इस कचरे से बिजली बनाने के लिए यह प्रोजेक्ट शुरू किया

गया था। रेमकी कंपनी और नगरीय निकायों द्वारा समन्वय से काम न करने के कारण कई कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई। अब सभी कठिनाइयों का समाधान कर दिया गया है। रेमकी कंपनी द्वारा किये गये कार्य के अनुसार नगरीय निकाय उसका भुगतान कर दें। कंपनी कचरे के उठाव की समुचित व्यवस्था करें। सभी नगर परिषद अध्यक्ष और सीएमओ एक माह में वाहनों की व्यवस्था करके हर घर से कचरे का उठाव करायें। कचरा संग्रहण की लगातार मानीटरिंग करें। नगरीय निकायों में बनाये गये कचरा स्टेशन में रेमकी कंपनी दो काम्पेक्टर लगाये। इसे चलाने के लिए नगरीय निकाय ट्रासफार्मर लगाकर बिजली का कनेक्शन उपलब्ध करायें। बैठक में मृत पशुओं के निष्पादन के लिए की जा रही व्यवस्था के संबंध में उप मुख्यमंत्री ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से नगरीय निकाय के वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा की। उन्होंने बैठक में कहा कि पहड़िया प्लांट में कंपनी 600 किलो प्रतिदिन मृत पशु निष्पादन का प्लांट लगाये। इसके लिए आवश्यक 15 करोड़ रूपये की राशि नगरीय प्रशासन विभाग देगा। बैठक में रीवा तथा सतना नगर निगम एवं 28 नगरीय निकायों में कचरा प्रबंधन की निकायवार समीक्षा की गयी। बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा कि जिन पांच बिन्दुओं पर बैठक में सहमति बनी है उन पर तत्परता से कार्यवाही करें। पहड़िया के कचरे से बिजली बनाने वाले प्लांट का 14 फरवरी को शुभारंभ प्रस्तावित है। इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर लें। कचरे का नियमित उठाव होने पर ही नगरीय निकाय स्वच्छ रहेंगे। बैठक में सीधी में कचरे ट्रांसफर स्टेशन के जमीन निर्धारण तथा चित्रकूट से कचरे के एक सप्ताह में उठाव के संबंध में चर्चा की गयी। बैठक में नगर निगम के अध्यक्ष श्री व्यंकटेश पाण्डेय, सीधी, रीवा और सतना जिले के सभी नगर पालिकाओं एवं नगर परिषदों के अध्यक्ष, शहरी विकास अभिकरण में विधायक प्रतिनिधि श्री राजेश पाण्डेय, आयुक्त नगर निगम श्रीमती संस्कृति जैन, अधीक्षण यंत्री शैलेन्द्र शुक्ला, संयुक्त संचालक आरपी सोनी, सभी सीएमओ तथा रेमकी कंपनी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

# श्री राम मंदिर अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा आज,जिले में विभिन्न कार्यक्रमों का होगा आयोजन,उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल कार्यक्रमों में होंगे शामिल

**रीवा(पुष्पांजली टुडे)।.**
श्री राम मंदिर अयोध्या में स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा आज 22 जनवरी को की जायेगी। इस अवसर पर जिले भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर जिले में भण्डारा, रंगोली, दीपदान एवं आरती व भजन-कीर्तन के कार्यक्रम होंगे। रीवा शहर में सभी मंदिरों में कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल शहर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे। पचमठा आश्रम में वृहद दीपदान एवं बीहर नदी आरती के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इसके साथ ही सभी प्रमुख मंदिरों में जन सहयोग से वृहद भण्डारे का कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

### उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल पहुंचे रीवा

# हवाई पट्टी पर जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने किया स्वागत

**रीवा(पुष्पांजली टुडे)।**
उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल भोपाल से हेलीकाप्टर द्वारा आज 21 जनवरी को अपरान्ह रीवा पहुंचे। चोरहटा हवाई पट्टी पर उप मुख्यमंत्री का जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने आत्मीय स्वागत किया।

# गुढ़ नगर में निकाली गई भगवान श्री राम की विशाल शोभा यात्रा राम मय हुआ नगर

**रीवा(पुष्पांजली टुडे)।**
गुढ़ नगर वासियों के तत्वाधान में बस स्टैण्ड स्थिति अखाडा वाले हनुमान जी मंदिर प्रांगण से सुबह 11/30 बजे भगवान श्री राम जी की बिशाल शोभा यात्रा निकाली गई यह यात्रा अखाडा वाले हनुमान मंदिर प्रांगण से चलकर बस स्टैण्ड, कटरा मोहल्ला चौहट्टा बाजार मेन मार्ग होते हुए नगर भ्रमण कर कष्टहर नाथ मंदिर प्रांगण पहुची तथा भगवान भोले नाथ के दर्शन कर भगवान श्री राम के जयकारे घोष के साथ नगर के मुख्य मार्ग होते हुए वापस हनुमान मंदिर पहुंच कर शोभा यात्रा का समापन कर प्रसाद वितरण किया जायेगा उक्त शोभा यात्रा में नगर के सैकडो राम भक्त सामिल होकर जय श्री राम के जय कारे के साथ नगर को राम मय बनाने कोई कसर नही छोड रहे है।

# धर्मपरिवार का सार्वजनिक दीपोत्सव आज 06:00 बजे,मानस भवन प्रांगण में सजेगी श्रीराम दीप रंगोली

**रीवा(पुष्पांजली टुडे)।**
हिन्दू उत्सव समिति धर्मपरिवार का सार्वजनिक दीपोत्सव आज 22 जनवरी को स्थानीय मानस भवन प्रांगण में सायं 03:00 बजे से श्री रामदीप रंगोली बनाना प्रारंभ किया जाकर सायं 06:00 बजे दीपदान नगर के प्रमुख रामभक्तो के करकमलो से किया जायेगा। मानसमंडल एवं प्रजापिता ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विद्यालय के संयुक्त सहयोग से धर्मपरिवार के आजीवन संरक्षक नारायण डिगवानी एवं अध्यक्ष गुरमीत सिंह मंगू के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया जायेगा। यह जानकारी कार्यक्रम संयोजक युवा शाखा के संजय तिवारी मुन्नू, रामकृष्ण अग्रवाल, युवा अध्यक्ष सुमित मांजवानी, राजेश साहू, अंशूमान गुप्ता, महिला शाखा की संतोषी गुप्ता, प्रज्ञा त्रिपाठी, नगर अध्यक्ष अनिल मिश्रा ने संयुक्त रूप से दी है।नगर के प्रमुख रामभक्त यजमानों में डॉ0 सी.बी.शुक्ला, डॉ0के0के0 परौहा, डॉ0 प्रभाकर चतुर्वेदी, डॉ0 ज्योति सिंह, डॉ0 नरेश बजाज, बी0के0 निर्मला, बी0के0प्रकाश, सुभाष बाबू पाण्डेय, पियूष त्रिवेदी, सुरेन्द्र मिश्रा भितरी, सुनील अग्रवाल एड0, गुरमीत सिंह मंगू, रामसखा यादव, प्रकाश तोमर सहित सैकड़ो गणमान्य नागरिक सामूहिक दीपदान में भाग लेंगे।मानस मण्डल द्वारा श्रीराम का नाम लेकर सुन्दर कांड का पाठ, व्याख्यान माला के साथ भंडारा का भी आयोजन किया जा रहा है। साथ मानस मंडल द्वारा प्रकाशित मानस पंचाग का प्रकाशन कराया जा कर लोकार्पित किया जायेगा। सभी राम अनुरागियों को सपरिवार पधारकर ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बनने का आग्रह किया गया है।

**सुमित मॉजवानी**
**अध्यक्ष**
**हिन्दू उत्सव समिति धर्मपरिवार**

# राम दरबार की प्रतिमूर्ति व जयकारों के साथ निकली भव्य कलश यात्रा

## चिरहुला मंदिर से लक्ष्मण बाग तक निकाली गई कलश यात्रा

**रीवा(पुष्पांजली टुडे )।**
श्रीराम मंदिर में स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व आयोजित उत्सव कार्यक्रम के तहत भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा में भगवान राम, माता सीता व भ्राता लक्ष्मण का स्वरूप धरें, बच्चों ने कलश यात्रा को भव्य रूपता प्रदान की। कलश यात्रा का आयोजन चिरहुला हनुमान मंदिर से लक्षणबाग परिसर तक किया गया। कलश यात्रा के पूर्व हनुमान मंदिर में राम भजन, नृत्य नाटिका, सुंदर कांड का आयोजन किया गया। तदुपरांत बड़ी संख्या में कलश लेकर महिलाओं ने भव्य कलश यात्रा में भाग लिया। यात्रा में श्री राम के जयकारों की धूम रही। वही लक्ष्मणबाग में भगवान के भजन व कीर्तन भी आयोजित हुए।कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल के निर्देशन में भव्य कलश यात्रा में जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाण्डेय एवं संभागीय समन्वयक जन अभियान परिषद प्रवीण पाठक की उपस्थिति में महिला एवं बाल विकास विभाग की सुपरवाइजर, कार्यकर्ताओं, सहायिकाओं सहित जन अभियान परिषद के प्रस्फुटन समिति के सदस्यों ने सहभागिता की। इस अवसर पर विकासखण्ड समन्वयक अमित अवस्थी, मेंटर्स, नवांकुर संस्था प्रतिनिधि, छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। इसी क्रम में जिले के रायपुर कर्चुलियान, जवा एवं नईगढ़ी में भी कलश यात्राओं का आयोजन किया गया।

# मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ तहसील देवेन्द्रनगर के अध्यक्ष बने गौरीशंकर कुशवाहा

## सतेंद्र कुमार प्रजापति की पुष्पांजली टुडे की ख़बर

पन्ना-पन्ना जिले में संगठन को लेकर बड़ी तैयारी रही है जिसमे संगठन के सदस्यों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया साथ में संगठन के द्वारा दी गई सभी जिम्मेदारियां को निभाया।आज दिनांक21जनवरी2024 को पन्ना जिले के देवेंद्रनगर, ककरहटी, पन्ना,अजयगढ़ के सभी पत्रकारों को पन्ना जिले की चौपड़ा मंदिर में सभी का नववर्ष मिलन कार्यक्रम रखा गया एवं सम्मान समारोह मनाया गया साथ में सभी पत्रकारों के 2024 का कार्ड वितरण भी हुआ एवं जिले के महासचिव द्वारा मध्यप्रदेश अध्यक्ष शलभ भदोरिया की निर्देशानुसार पर जिला अध्यक्ष धनंजय श्रीवास्तव जी की अनुशंसा से देवेंद्रनगर तहसील अध्यक्ष गौरीशंकर कुशवाहा अजयगढ़ से अध्यक्ष आशीष यादव एवं पन्ना से अध्यक्ष अशोक शाक्य जी को बनाया गया जिसमें पन्ना ,अजयगढ़, ककरहटी देवेंद्रनगर की सभी पत्रकार साथी उपस्थित रहे एवं कार्यक्रम संपन्न हुआ साथ ही तहसीलअध्यक्ष की कमान सौंपते हुए पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर संगठन को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के संकल्प के साथ जिम्मेदारियां प्रदान की गई।

# कार सेवकों को किया नजरअंदाज

**योगेश शर्मा राजोरिया**
**पुष्पांजलि टुडे**

जिन लोगों ने वास्तविक कर सेवा की उन्हें कार्यक्रमों की सूचना भी नहीं दी गई चां चौड़ा क्षेत्र के महेंद्र सोनी राजेश खंडेलवाल सहित अन्य लोग भी कार सेवा में हुए थे सम्मलित। बाबरी मस्जिद ढहाने में इनका भी रहा योगदान चाचोड़ा महेंद्र सोनी सुनाए संस्मरण नीव के पत्थर को भूले आयोजक संस्मरण मैं संवाददाता को बताया कि चाचौड़ा से मेरे मित्र मुझे ट्रेन तक छोड़ने गए यही से यात्रा प्रारंभ हुई।हमारे जत्थे मैं दस लोगथे कुछ झांसी और लखनऊ मैं गिरफ्तार हो गए बाद मैं पांच ही बचे थे। जिसमे राजेश खंडेलवाल जी बीनागंज स्वर्गीय फूलचंद जी बीनागंज, स्वर्गीय छोटू तिवारी जी चाचौड़ा, स्वर्गीय दिनेश जी सोनी बीनागंज, हरिशंकर जी रमडी थे।केसे पहुचे अयोध्या बस ट्रेन और जंगलों के रास्ते बचते बचाते पैर में छाले पड़ने पर हिम्मत नही हारी सरयू नदी पुल पर गोली चली तब साथियों को गोली लगी तब मैं पुलिस की गाडी की ओट में बच गया और पुल से सरयू नदी में कूद गया जब मेरे तैरने की बिल्कुल हिम्मत नही थी तब राम राम कर तैरने की कोशिश कर रहा था सामने देखा तो कोई नव युवक बड़ा बांस मुझे पकड़ा रहा हैं। तो मुझे हिम्मत आई बास पकड़ा और केसे पार हुआ जेसे तेसे पार लग गया आज भी बो सीन याद कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।जा पर कृपा राम की होई। ता पर कृपा करे सब कोई।। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा मैं भले ही नही जा पा रहे है लेकिन सपना साकार होते देख सुखद अनुभूति हो रही है।

# राम मंदिर निर्माण हेतु श्रीमती सुमित्रा बाई ने लिया था प्राण

**योगेश शर्मा राजोरिया**
**पुष्पांजलि टुडे**

चाचौड़ा चंपावती नगरी धार्मिक नगरी के नाम से प्रसिद्ध है श्री राम मंदिर निर्माण को लेकर श्रीमती सुमित्रा बाई चाचौड़ा ने प्रण किया था कि जब तक राम मंदिर का निर्माण नहीं हो जाता वह पलंग पर नहीं बैठेंगे और ना ही पलंग पर सोएंगी श्रीमती सुमित्रा बाई दो बार अयोध्या जाकर श्री राम के दर्शन भी कराई हैं उनसे मिली जानकारी के अनुसार एक बार जब मस्जिद खड़ी थी तब और एक बार जब मस्जिद ढाइ गई थी इसके बाद श्री राम जब चबूतरे पर विराजमान थे श्रीमती सुमित्रा बाई ने कहा कि आज मेरा सपना साकार हुआ एवं में उन सभी देशवासियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने राम मंदिर में निर्माण में सहयोग किया

# 60 लीटर हाथ भट्टी की बनी कच्ची शरा सहित किया आरोपी को गिरफ्तार

**अनिल कुशवाह**
**पुष्पांजलि टुडे**

शिवपुरी-पुलिस अधीक्षक महोदय शिवपुरी श्री रघुवंश सिह भदौरिया, श्रीमान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले एवं श्रीमान एसडीओपी महोदय श्री संजय चतुर्वेदी द्वारा अवैध शराब कारोवारियो एवं अवैध हथियार कारोवारियो पर धरपकड कर की जाने वाली कार्यवाही के पालन में उनि कुसुम गोयल थाना प्रभारी सुभाषपुरा द्वारा लगातार मुखबिर से सपंर्क रखते हुये घटना स्थल पावर हाउस के पीछे ग्राम धौलागढ के पास से आरोपी सुल्तान मोगिया पुत्र राधे मोगिया उम्र 25 साल निवासी ग्राम धौलागढ थाना सुभाषपुरा जिला शिवपुरी का पुलिस को देखकर भागने लगा जिसे घेराबंदी कर पकडा मौके पर आरोपी सुल्तान मोगिया के कब्जे से कुल 60 लीटर हाथ भट्टी की बनी कच्ची शराव को बिधिवत जप्त किया गया । थाना हाजा पर अपराध क्र.17/2024 धारा 34(2) आबकारी एक्ट का कायम किया गया। आरोपी सुल्तान मोगिया पुत्र राधे मोगिया उम्र 25 साल निवासी ग्राम धौलागढ थाना सुभाषपुरा जिला शिवपुरी को माननीय न्यायालय शिवपुरी पेश किया जावेगा। आरोपी को गिरफ्तार करने में समस्त हमराही फोर्स की अहम भूमिका रही।
उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी सुभाषपुरा उनि कुसुम गोयल, प्रआर0 197 अभय सिंह, प्रआर0 275 अनिल कुमार, आर0 301 विमल बोहरे, आर0 274 धर्मेन्द्र शर्मा, आर0 826 प्रशांत गुर्जर, आर0 740 रविन्द्र शर्मा, आर0598 अर्जुन जाट, म.आर.1146 प्रीति राठौर, आर 968 दामोदर भार्गव की अहम भूमिका रही ।

## रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम दृष्टिगत रखते हुए शहर की ट्रैफिक व्यवस्था बदली रहेगी

**अनिल कुशवाह**
**पुष्पांजलि टुडे**

**शिवपुरी-** बदली रहेगी शहर की ट्रैफिक व्यवस्था श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम एवं माननीय श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री महोदय के आम सभा एवम प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुए माधव चौक से गुरु द्वारा चौराहा , गांधी चौक से धर्मवीर पुलिया पुराना बस स्टैंड क्षेत्र, की ट्रैफिक आवजाही सुबह 9:00 बजे से दोपहर 14:00 बजे तक प्रतिबंधित एवम परिवर्तित रहेगी।डायवर्सन प्लान निम्नानुसार है कोलारस एवम झांसी से आने वाले वाहन गुरुद्वारा चौराहा से अवशक्तानुसार कोलारस एवम अग्रसेन चौराहे हेतु डायवर्टेड होंगे ग्वालियर नाके से आने वाले वाहन माधव चौक की सूबात मस्जिद के माध्यम से शहर के अंदर डायवर्टेड रहेंगे पुराने बस स्टैंड की ओर से आने वाले वाहन धर्मवीर पुलिया के पास से डायवर्टेड रहेंगे इस दौरान पुराने बस स्टैंड के पास स्थित पार्किंग का उपयोग किया जा सकेगा अस्पताल चौराहे से गांधी चौराहे की ओर सभी प्रकार के वाहन ( दो पहिया वाहन को छोड़कर ) प्रतिबंधित रहेंगे। गांधी चौक से माधव चौक का रास्ता पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। अस्पताल चौराहे से गांधी चौक तक आने वाले वाहन गांधी चौक से मुख्य बाजार अथवा सहायक बाजार की ओर डायवर्ट होंगे।

# नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री शुक्ला ने कार्यक्रम स्थल अमायन का निरीक्षण किया

**दैनिक पुष्पांजली टुडे**

**भिण्ड ।** केन्द्रीय नागरिक उड्डयन और इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का भिण्ड जिले के मेहगांव क्षेत्र के अमायन में प्रस्तावित कार्यक्रमों के दृष्टिगत नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला ने अमायन पहुंचकर चिन्हित कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया एवं विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर आवश्यक जानकारी संबंधित अधिकारियों से ली तथा आवश्यक दिशा निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।मंत्री श्री शुक्ला ने कहा कि केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया के कार्यक्रम की व्यवस्थायें बेहतर होना चाहिए। कार्यक्रम की पहले से प्लानिंग की जाए ताकि कोई परेशानी न हो। निरीक्षण के दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह नरवरिया, एसडीएम मेहगांव विकास सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

# ग्वालियर भिंड हाईवे सिक्स लेन की मांग को लेकर भूतपूर्व सैनिक एवं समाजसेवीयो की संयुक्त बैठक हुई

## प्रत्येक गांव तहसील स्तर पर मीटिंग की जा रही है जल्द बडे आंदोलन की दी चेतावनी

**दैनिक पुष्पांजली टुडे**

भिण्ड । मेहगांव में शारदा विद्यापीठ में ग्वालियर- भिंड हाईवे की सिक्स लेन की मांग को लेकर भूतपूर्व सैनिक एवं समाजसेवियों द्वारा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में माताएं बहने एवं नौजवान बुजुर्ग बड़ी संख्या में मौजूद रहे जिसमें राष्ट्रीय हिंदू शक्ति संगठन के प्रदेश अध्यक्ष शुभम पचौरी ने पहुंचकर समर्थन दिया एवं इस लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर सभी को आश्वासन दिया कि इस लड़ाई को सभी मिलकर लड़ेंगे इस मौके पर शुभम पचौरी ने कहा की ग्वालियर भिंड इटावा हाईवे सिंगर रोड एवं 30 फीट की रोड होने से एवं कोई डिवाइडर ना होने से गत वर्षों में हजारों हादसे हुए भिंड जिले का शायद ही कोई गांव बचा है जिस गांव के दो चार नौजवान भिंड ग्वालियर हाईवे पर मौत के मुंह में नहीं गए हो हजारों बहनों की मांग सुनी हो गई हजारों बच्चे अनाथ हो गए हजारों मां-बाप के बुढ़ापे का सहारा इस हाईवे ने छीना है भिंड ग्वालियर हाईवे मौत का हाईवे बनकर रह गया है हम सभी समाजसेवियों को एवं चंबल संभाग के आमजन को इस लड़ाई में साथ आना चाहिए जिससे हम 6 लाइन का हाईवे बनवा सके और हो रहे हादसे को रोक सके जिससे हमारे हजारों भाइयों की जान बच सके इस मौके पर मौजूद रहे शुभम पचौरी प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय हिंदू शक्ति संगठन, सुनील फौजी, रिटायर वीरेंद्र वर्मा पूर्व प्रत्याशी विधानसभा भिंड जयदीप फौजी ,अरविंद शर्मा, कालीचरण शर्मा फौजी, राहुल गुर्जर, राजेंद्र कुमार शर्मा, लक्ष्मण दीक्षित, कमल सिंह राम बिहारी, रामवीर सिंह सचिन लोधी महावीर सिंह राजपूत, धीर सिंह, सुनील तोमर ,पवन सिंह राठौड़ सहित काफी संख्या में रिटायर सैनिक एवं समाजसेवी व महिलाएं काफी तादाद में उपस्थित रही।

## गीतिका...! अवध में राम आये हैं

अवध में राम आने को सुने सब लोग धाए हैं।
मनुज क्या पशु-गगन चर यह सहज संयोग पाए हैं।।
नदी सरयू बड़ी प्रमुदित पुनः श्री राम को पाकर।
लिए उर लालसा दर्शन यहाँ हर देव आए हैं।।
उमड़ कर विश्व पूरा ही खड़ा सरयू किनारे है।
पधारें राम रसना से ऋचाएं गुनगुनाए हैं।।
मनुज का रूप धर कर के यहाँ पर देवता आए।
खड़ाऊ-रत्न स्वर्णिम दिव्य गहने साथ लाए हैं।।
किनारे पर खड़ी पूजा निहारे राम को अपने।
हुए साकार सपने गीतिका कुछ बुदबुदाए हैं।।
कु.पूजा दुबे ।

## खुल गई भाग्य अयोध्या की

हो देखो खुल गई भाग्य अयोध्या के,
प्रभु श्री राम जी फिर से पधारे,
हो देखो खुल गई भाग्य अयोध्या के,
प्रभु श्री राम जी फिर से पधारे,
बडी उत्साह ,और बड़ी उल्लास है,
ओ जनता के मन में,
हो देखो खुल गई भाग्य अयोध्या के,
प्रभु श्री राम जी फिर से पधारे,
बड़ी महिमा, बड़ी अपरम्पार है,
ओ प्रभु श्री राम जी के नाम में,
कैसे करू मैं मुख से बखान,
ये तो विष्णु के अवतार हैं,
अरे कैसे करे हम मुख से बखान,
ये तो हमारे पालन हार है,
हो देखो खुल गई भाग्य अयोध्या के ,
प्रभु श्री राम जी फिर से पधारे,
बड़ी महिमा, बड़ी अपरम्पार है,
प्रभु श्री राम जी के काम में,
दशो..अवतार को मार गिराया ,
प्रभु श्री राम भगवान ने,
लंका पर विजई पाया,
प्रभु श्री राम भगवान ने,
कैकई के वचन को निभाया ,
प्रभु श्री राम भगवान ने,
दशरथ का राज्य चलाया ,
प्रभु श्री राम भगवान ने,
कितने है इनके नेक काम,
प्रभु श्री राम भगवान के,
कैसे करे हम मुख से बखान,

# एकला चलो की नीति पर आगे बढ़ रहीं मायावती बसपा को बड़ा नुकसान पहुँचा रही हैं

बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने पार्टी को युवा नेतृत्व देने के लिये अपने भतीजे आकाश आनंद को अपना राजनीतिक उत्तराधिकारी बना दिया है। अब उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड को छोड़कर बाकी प्रदेशों में संगठन का काम आकाश आनंद ही संभालेंगे। ब्रिटेन से एमबीए कर चुके 28 वर्षीय आकाश आनंद मायावती के छोटे भाई आनंद कुमार के बेटे हैं। मायावती ने उन्हें 2019 में पार्टी का राष्ट्रीय संयोजक बनाया था। तभी से उनके मायावती के उत्तराधिकारी बनने की चर्चा चलती रहती थी।आकाश आनंद ने पिछले दिनों सम्पन्न हुये राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, मिजोरम और तेलंगाना विधानसभा चुनाव में पार्टी की कमान संभाली थी। मगर वहां बसपा के पक्ष में कोई विशेष हवा नहीं बना पाए। कभी देश में प्रमुख राजनीतिक दल रही बसपा अब अपनी राष्ट्रीय मान्यता बचाने का प्रयास कर रही है। उत्तर प्रदेश में चंद्रशेखर रावण भी दलित नेता के तौर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। इसी के चलते मायावती ने बसपा में युवा नेतृत्व देने के लिए अपने भतीजे को मैदान में उतारा है।कांशीराम ने जब 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी का गठन किया था। तब उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि आगे चलकर बसपा परिवारवाद की भेंट चढ़ जाएगी। परिवारवाद से बचने के लिए कांशीराम ने शादी नहीं की थी। मायावती की प्रतिभा देखकर कांशीराम ने उन्हें राजनीति में आगे बढ़ाया और अपना उत्तराधिकारी बनाया था। कांशीराम के कारण मायावती चार बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बन पाई।कांशीराम चाहते तो स्वयं मुख्यमंत्री बन सकते थे। मगर वह किंग मेकर की भूमिका में ही रहना चाहते थे। इसलिए उन्होंने मायावती को आगे बढ़ाया। आज उन्हीं मायावती ने अपने भतीजे को पार्टी का उत्तराधिकारी घोषित कर बसपा को परिवारवाद के रास्ते पर धकेल दिया है। वर्तमान समय में बसपा राजनीतिक रूप से कमजोर पड़ गई है। उनके परंपरागत दलित मतदाता भी छिटक रहे हैं। वैसे भी विषम परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए मायावती को किसी युवा नेता की तलाश थी। मगर उन्होंने किसी बाहरी व्यक्ति पर भरोसा करने की बजाय अपने भतीजे को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना बेहतर समझा।हाल ही में संपन्न हुए राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना व मिजोरम विधानसभा के चुनाव में बसपा का ग्राफ गिरा है। राजस्थान, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ जैसे हिंदी पट्टी वाले प्रदेशों में बहुजन समाज पार्टी एक तीसरे विकल्प के रूप में अपनी ताकत का एहसास कराती आई थी। मगर इस बार के विधानसभा चुनाव में बसपा का सूपड़ा साफ हो गया है। पिछले विधानसभा चुनाव में राजस्थान में बसपा को 4 प्रतिशत वोट व 6 सीटों पर जीत मिली थी। मगर इस बार यहां बसपा 1.82 प्रतिशत वोटों के साथ मात्र दो सीटों पर ही सिमट गई है। राजस्थान विधानसभा चुनाव में बसपा को मात्र 721037 वोट मिले हैं। मध्य प्रदेश में पिछली बार बसपा को दो सीट व 5.01 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि इस बार के चुनाव में वहां बसपा को 3.40 प्रतिशत यानी 14,77,202 वोट तो मिल गए मगर सीट एक भी नहीं मिली।इसी तरह छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में पिछली बार बसपा को दो सीटों के साथ 552313 यानी 3.9 प्रतिशत वोट मिले थे। मगर इस चुनाव में वहां बसपा को सीट तो एक भी नहीं मिली। बसपा को 319903 यानी 2.05 प्रतिशत वोट ही मिले हैं। तेलंगाना में बसपा का खाता भी नहीं खुला। वहां पार्टी को 321074 यानी 1.37 प्रतिशत वोट मिले हैं। मिजोरम में तो वैसे ही बसपा का कोई नाम लेवा नहीं है। 2022 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में बसपा 53 सीटों पर चुनाव लड़ी मगर एक भी नहीं जीत पायी। वहां पार्टी को 14613 यानी 0.35 प्रतिशत मत मिले थे। गुजरात विधानसभा के पिछले चुनाव में बसपा ने 101 सीटों पर चुनाव लड़ा था। जिसमें 100 सीटों पर पार्टी प्रत्याशियों के जमानत जब्त हो गई थी। वहां पार्टी को मात्र 158123 यानी 0.5 प्रतिशत मत मिले थे। उत्तराखंड में बसपा के दो व पंजाब में एक विधायक है।उत्तर प्रदेश में 2022 के विधानसभा चुनाव में पार्टी महज एक सीट ही जीत सकी थी। वहां बसपा को सिर्फ 12.88 प्रतिशत मत मिले थे। वहीं 2017 के विधानसभा चुनाव में 19 सीट व 22.31 प्रतिशत वोट मिले थे। 2012 की विधानसभा चुनाव में बसपा को उत्तर प्रदेश में 80 सीटों के साथ 25.91 प्रतिशत वोट मिले थे। वहीं 2007 के विधानसभा चुनाव में बसपा ने 30.43 प्रतिशत वोटो के साथ 206 सीट जीतकर अपने दम पर सरकार बनाई थी। 2002 के चुनाव में बसपा को 98 सीट व 23.6 प्रतिशत वोट मिले थे। 1996 के चुनाव में 67 सीट व 19.64 प्रतिशत वोट मिले थे। 1993 के चुनाव में 67 सीट व 11.12 प्रतिशत वोट, 1991 के चुनाव में 12 सीट व 9.44 प्रतिशत वोट मिले थे। 1989 के चुनाव में पहली बार बसपा ने उत्तर प्रदेश में चुनाव लड़कर 13 सीट तथा 9.41 प्रतिशत वोट पाए थे।

उपरोक्त आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि बहुजन समाज पार्टी का जनाधार लगातार कमजोर पड़ता जा रहा है। लोकसभा चुनाव के आंकड़ों को देखें तो 2019 के चुनाव में बसपा को उत्तर प्रदेश में 10 सीटें व 3.67 प्रतिशत वोट मिले थे। 2014 के लोकसभा चुनाव में बसपा का खाता भी नहीं खुला था। हालांकि पार्टी को 4.19 प्रतिशत वोट मिले थे। 2009 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने उत्तर प्रदेश में 20 व मध्य प्रदेश में एक कुल 21 सीट व 6.56 प्रतिशत वोट पाए थे। 2004 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने उत्तर प्रदेश से 19 सीट जीतकर 5.33 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे।1999 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने उत्तर प्रदेश से 14 सीट जीती थी तथा 4.16 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे। 1998 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने पांच सीट तथा 4.67 प्रतिशत वोट पाए थे। 1996 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने 11 सीट तथा 4.02 प्रतिशत मत प्राप्त किए थे। 1991 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने तीन सीट व 1.61 प्रतिशत मत प्राप्त किए थे। 1989 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा था और पार्टी ने चार सीटें जीत कर 2.07 प्रतिशत वोट पाये थे।पिछले लोकसभा चुनाव में बसपा ने उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी से समझौता होने के चलते 10 सीटों पर जीत जरूर हासिल कर ली थी। मगर उसके बाद मायावती ने सपा से चुनावी गठबंधन समाप्त कर एकला चलो की नीति पर ही 2022 में उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव लड़ा था। 2022 में उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में जहां से बसपा एक ताकत बनकर उभरी थी और चार बार सरकार बना चुकी है। वहां मात्र एक सीट पर सिमट गयी थी।

कांशीराम के जमाने में बसपा का पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे कई प्रदेशों में बड़ा प्रभाव रहता था। जो अब सिमटने लगा है। बसपा से जीते हुए बहुत से सांसद, विधायक दल बदल कर दूसरे दलों में शामिल हो जाते हैं। जिससे बसपा कमजोर होने लगी है। राजस्थान विधानसभा के 2008 व 2018 के चुनाव में बसपा से 6 6 विधायक चुनाव जीते थे। मगर दोनों ही बार सभी विधायकों ने कांग्रेस में विलय कर गहलोत सरकार में मंत्री व अन्य लाभकारी पदों पर बैठ गए थे। कभी कैडर पार्टी का मुख्य आधार होता था। मगर आज पार्टी में कैडर नाम मात्र का भी नहीं बचा है। पार्टी के अधिकांश बड़े पदों पर दलबदलुओं का कब्जा हो गया है। मायावती ना तो भाजपा के साथ जाना चाहती है और ना ही इंडिया गठबंधन में शामिल होना चाहती है।

## संपादकीय

# मायावती का एकला चलो रे... का फैसला

बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो सुश्री मायावती का अपने जन्मदिन के मौके पर यह ऐलान लोगों को चौंका सकता है कि आगामी लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी किसी भी गठबन्धन का हिस्सा न बनकर एकला ही चलेगी, क्योंकि बहुत से लोगों को भरोसा था कि देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए जीवन के 68 साल पूरा करने वाली बहुजन नेता इंडिया गठबन्धन के साथ जा सकती है। फिर, लोग यह भी सोच सकते थे कि यह उनके सामने नायाब अवसर था कि वे खुद पर भारतीय जनता पार्टी की बी टीम होने का ठप्पा व कलंक मिटा सकती थीं।

बहरहाल, मायावती के इस फैसले को लेकर अधिकतर का मानना है कि वे भाजपा से घबराई हुई नेता हैं और फिलहाल अपने अस्तित्व को बचाने की राजनीति कर रही हैं। जिस तरह से देश भर में विपक्षी नेताओं पर चल रहे केन्द्रीय जांच एजेंसियों के छापों से मायावती बची हुई हैं, उस सुरक्षा कवच को बनाये रखने के लिये उनके वास्ते लाजिमी था कि वे इंडिया की ओर झांके भी नहीं। भाजपा के नेतृत्व में बने एनडीए से भी विलग रहने का उनका फैसला बतलाता है कि वे अपनी बहुजन नेता की पहचान को भी बचाये रखना चाहती हैं। ऐसा भी अनुमान है कि उन्हें चुनाव लड़ने के लिये किसी भी तरह की संसाधन सम्बन्धी कमी भाजपा की ओर से नहीं आने दी जायेगी।मायावती के इस फैसले के बाद इस बात पर मंथन होना स्वाभाविक है कि उनका फैसला कितना सही है। सम्भव है कि उन्होंने दोनों गठबन्धनों (एनडीए-इंडिया) में से किसमें शामिल हुआ जाये, इसका निर्णय इस आधार पर लिया होगा कि किससे पार्टी को कम नुकसान होगा। अधिक लाभ पर विचार करने का इसलिये सवाल ही नहीं रह गया है कि पिछले कुछ समय से बहन जी जिस प्रकार की राजनीति कर रही हैं, उसमें अब उनकी पार्टी का दबदबा लगभग समाप्त हो चुका है और उन्हें अब अपने दल व खुद को तो बचाये रखना ही है, अपने उत्तराधिकारी आकाश को भी ठौर-ठाक स्थापित करना है। हालांकि इस फैसले ने साबित कर दिया है कि उन्हें भाजपा की बी टीम कहलाये जाने से कोई समस्या नहीं है और न ही जिन दलितों, शोषितों व वंचितों का वे प्रतिनिधित्व करती है, उनके हितों से कोई सरोकार है। पिछले दिनों उनके एक सांसद दानिश अली के खिलाफ भरी लोकसभा में भाजपा के रमेश बिधूड़ी ने अपशब्दों का इस्तेमाल किया पर जिस प्रकार से उन्हें मायावती ने अकेला छोड़ दिया, उससे साबित हो चुका था कि वे पहले की तरह बहुजनों व अल्पसंख्यकों की सच्ची नुमाइंदगी करने के लायक नहीं रह गई हैं। ऐसे ही, उनके अपने उत्तर प्रदेश में दलितों पर अत्याचार होते रहे और वे चुप रहीं, उससे साफ हो चुका था कि उनका लड़ने का माद्दा भी चुक गया है।2022 के प्रारम्भ में हुए उप्र विधानसभा चुनाव भी उन्होंने स्वतंत्र होकर लड़ा जिसका नतीजा यह रहा कि बसपा का सदन में केवल एक ही विधायक जीतकर आया। 2019 के चुनावों में अलबत्ता उसे 10 सीटों पर सफलता मिली थी। सम्भवतः मायावती की उम्मीद यह है कि इस बार भी उन्हें कम से कम इतनी या इससे बढ़कर सीटें मिल सकती हैं लेकिन वे यह भूल रही हैं कि पिछले विधानसभा चुनाव में बसपा की दुर्गति से लोकसभा चुनाव में सफलता का आधार कमजोर हो चुका है।

हालांकि मौजूदा सियासी परिस्थितियों को देखते हुए यह चुनाव पार्टीगत हार-जीत से बढ़कर लोकतंत्र बचाने की लड़ाई बन चुका है जिसमें हर संगठन व नेता से देश एक निश्चित भूमिका की अपेक्षा कर रहा है। फिर, मायावती का जो समर्थक वर्ग है, उसी का भाजपा के दो शासनकाल में सर्वाधिक उत्पीड़न हुआ है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आर्थिक नीति ने गैरबराबरी को बेइंतिहा बढ़ाया है। जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा शासकीय राशन पर निर्भर है। राजनैतिक निरंकुशता सतत बढ़ी है जिसमें कुचले जाने वालों में दलित, अल्पसंख्यक और वंचित समूह हैं। साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण एवं सामाजिक विखंडन के शिकार भी जो लोग हैं, वे मायावती का ही अनुसरण करते हैं।

# भारत में आय की असमानता का कम होना सरकार की एक बड़ी उपलब्धि है

भारत के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि विशेष रूप से कोरोना महामारी के बाद से भारत के आर्थिक क्षेत्र में 'य' आकार का विकास हो रहा है। आर्थिक दृष्टि से 'य' आकार के विकास से आशय यह है कि देश की अर्थव्यवस्था में गरीब अधिक गरीब हो रहा है और अमीर और अधिक अमीर हो रहा है। हालांकि हाल ही के समय में भारत में आय, बचत, उपभोग एवं खर्च आदि के सम्बंध में इस प्रकार की नीतियां बनाई जाती रही हैं कि देश के गरीब वर्ग को अधिकतम लाभ मिले। इसके लिए कई विशेष योजनाएं, जैसे, गरीब अन्न कल्याण योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत योजना, आवास योजना एवं प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना आदि चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के अंतर्गत सब्सिडी आदि की राशि लाभार्थियों के खातों में सीधे ही हस्तांतरित कर दी जाती है। इससे गरीब वर्ग के लाभार्थियों को सहायता की राशि 100 प्रतिशत तक मिल जाती है और इसमें भ्रष्टाचार की सम्भावना लगभग शून्य हो जाती है।

भारतीय स्टेट बैंक के आर्थिक अनुसंधान विभाग द्वारा भारत के आयकर विभाग द्वारा जारी किए गए आयकर विवरणियों सम्बंधी आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण करते हुए यह बताया है कि भारत में नागरिकों के बीच आय की असमानता कम हो रही है। देश में वित्तीय वर्ष 2014 में व्यक्तिगत आयकर रिटर्न फाइल करने वाली कुल संख्या में 36.3 प्रतिशत संख्या निम्न आय वर्ग की श्रेणी के नागरिकों की थी और यह वर्ग अब वित्तीय वर्ष 2021 में मध्यम आय वर्ग की श्रेणी में आ गया है तथा इस बीच इस वर्ग की आय 21.1 प्रतिशत बढ़ी है। इस कारण के चलते 3.5 लाख रुपए वार्षिक आय वाले नागरिकों की संख्या वित्तीय वर्ष 2014 में 31.8 प्रतिशत से घटकर वित्तीय वर्ष 2021 में 15.8 प्रतिशत रह गई है। इसी प्रकार, सबसे अधिक आयकर अदा करने वाले 2.5 प्रतिशत नागरिकों का कुल आय में योगदान 2.81 प्रतिशत से घटाकर 2.28 प्रतिशत हो गया है। अतः देश में मध्यम आय वर्ग के नागरिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। आय कर दाखिल करने वाले नागरिकों की प्रति व्यक्ति औसत आय वित्तीय वर्ष 2014 में 3.1 लाख रुपए से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2021 में 11.6 लाख रुपए हो गई है और वित्तीय वर्ष 2022 में यह 12.5 से 13 लाख रुपए के बीच रहने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

भारत के आर्थिक विकास में भारतीय महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ रही है। कुल श्रमिक तंत्र में महिलाओं की संख्या 2017-18 में 23.3 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022-23 में 37 प्रतिशत हो गई है। महिलाएं आज कृषि के क्षेत्र में भी अपना योगदान लगातार बढ़ाती जा रही हैं। आयकर विवरणियां फाइल करने में भी महिलाओं की संख्या अब 15 प्रतिशत हो गई है। भारत में लगातार तेज गति से हो रही आर्थिक प्रगति के चलते आज भारत में दोपहिया वाहनों की तुलना में चार पहिया वाहनों के बिक्री में अधिक वृद्धि दर हासिल हो रही है। वित्तीय वर्ष 2019 में 2.12 करोड़ दोपहिया वाहनो बिक्री हुई थी, जबकि उस वर्ष कृषि क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद में केवल 2.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई थी और मानसून में भी लगभग 14 प्रतिशत की कमी रही थी। वर्तमान वित्तीय वर्ष में दोपहिया वाहनों की बिक्री 1.8 करोड़ की रही है। इसके पीछे मुख्य कारण यह बताया जा रहा है कि एक तो मध्यम वर्ग अपने लिए मकानों की खरीद अधिक मात्रा में कर रहा है और दूसरे मध्यम वर्ग आज दोपहिया वाहनों के स्थान पर चार पहिया वाहन खरीदने की ओर आकर्षित हुआ है। इसी प्रकार, आज अर्द्धशहरी क्षेत्रों में लगभग 2 करोड़ परिवार खाद्य पदार्थों को खरीदने हेतु -जोमेटो ऐप- का उपयोग कर रहे हैं। अतः आज भारत के मध्यम वर्ग का टेस्ट बदल रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में नागरिकों का उक्त व्यवहार यदि आगे आने वाले समय में भी जारी रहता है तो एक अनुमान के अनुसार, अगले दशक की समाप्ति पर 50 प्रतिशत उत्पादों का उपभोग (लगभग 16 लाख करोड़ रुपए) गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों में से 90 प्रतिशत नागरिकों द्वारा किया जाने लगेगा। आज गरीब वर्ग को केंद्र सरकार द्वारा बहुत बड़े स्तर पर मुफ्त अनाज, मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएं एवं मकान आदि उपलब्ध कराए जा रहे हैं (अभी तक 4 करोड़ परिवारों को रहने के लिए मकान उपलब्ध कराए जा चुके हैं), जिसके कारण इस वर्ग की 8.2 लाख करोड़ रुपए के अतिरिक्त उपभोग कर सकने की क्षमता बढ़ी है। वित्तीय वर्ष 2013-14 से वित्तीय वर्ष 2021-22 के बीच 5 लाख से 10 लाख रुपए की आय वाले वर्ग में आय कर विवरणियां फाइल करने वाले नागरिकों की संख्या 295 प्रतिशत से बढ़ी है। इसी प्रकार, 10 लाख रुपए से 15 लाख रुपए की आय वाले वर्ग में आय कर विवरणियां फाइल करने वाले नागरिकों की संख्या 291 प्रतिशत से बढ़ी है। वित्तीय वर्ष 2022 में 7 करोड़ नागरिकों द्वारा आय कर विवरणियां फाइल की गई थी, यह संख्या वित्तीय वर्ष 2023 में बढ़कर 7.4 करोड़ हो गई और अब वित्तीय वर्ष 2024 में 8.5 करोड़ हो जाने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। यह संख्या देश में औपचारिक क्षेत्र में कुल श्रमिकों की संख्या का 37 प्रतिशत है।

पारम्परिक रूप से महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली एवं कर्नाटक राज्यों से आयकर विवरणियां फाइल करने वाले नागरिकों की संख्या अधिक रहा करती थी परंतु अब कुछ नए राज्य तेजी से इन राज्यों को पीछे छोड़ने के प्रयास में आगे बढ़ रहे हैं। इनमे प्रथम स्थान पर उत्तर प्रदेश राज्य है। इसके बाद आंध्र प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश एवं हरियाणा राज्य आते हैं। अब इन राज्यों से भी आय कर विवरणियां फाइल करने वाले नागरिकों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है।

व्यक्तिगत आय कर अदा करने वाले नागरिकों के अतिरिक्त सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम श्रेणी की इकाईयों में भी लगभग इसी प्रकार के परिवर्तन दिखाई दिए हैं। वित्तीय वर्ष 2014 से वित्तीय वर्ष 2021 के बीच सूक्ष्म आकार की 19.5 प्रतिशत इकाईयों की आय बहुत तेज गति से बढ़ी है और अब सूक्ष्म आकार की ये इकाईयां छोटी, मध्यम एवं बड़ी श्रेणी की इकाईयों में परिवर्तित हो गई हैं। इन सूक्ष्म इकाईयों में से 4.8 प्रतिशत इकाईयां छोटी श्रेणी की इकाईयों में, 6.1 प्रतिशत इकाईयां मध्यम श्रेणी की इकाईयों में एवं 9.3 प्रतिशत इकाईयां बड़ी श्रेणी की इकाईयों में परिवर्तित हो गई हैं। विशेष रूप से भारत में उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना के लागू होने के बाद से सूक्ष्म आकार की इकाईयां, छोटे आकार, मध्यम आकार एवं बड़े आकार की इकाईयों में परिवर्तित होती जा रही हैं। हाल ही के समय में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम श्रेणी की इकाईयों को बैंकों द्वारा प्रदान किए गए ऋण की राशि में भी अभूतपूर्व वृद्धि देखने में आई है। वित्तीय वर्ष 2023 में उक्त वर्ग की इकाईयों के 2.13 करोड़ खातों में 22.6 लाख करोड़ रुपए का ऋण प्रदान किया गया था और जो औसत रूप से प्रति ऋण खाता लगभग 10.6 लाख रुपए बैठता है।

## शमी के वीडियो देख रहा इंगलैंड का तेज गेंदबाज, बोला- गेंद सीम करने का कर रहा हूं अभ्यास

**अबुधाबी।** टीम इंडिया अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज जीतने के बाद अब 25 जनवरी से इंगलैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज जीतने के लिए उतरेगी। सीरीज का पहला मुकाबला हैदराबाद में होना है। बीसीसीआई पहले दो टेस्ट मैचों के लिए टीम इंडिया की घोषणा कर चुकी है जिसमें फिलहाल मोहम्मद शमी का नाम नहीं है। शमी तीसरे टेस्ट से टीम इंडिया के साथ जुड़ सकते हैं लेकिन

उनका डर अभी भी इंगलैंड के बल्लेबाजों के अलावा तेज गेंदबाजों में देखने को मिल रहा है। भारतीय दौरे से पहले इंगलैंड के तेज गेंदबाज ओली रॉबिंसन ने माना कि शमी गेंद की 'सीम% का बहुत अच्छी तरह से इस्तेमाल करते हैं और वह उनके वीडियो देखकर इस कला का अभ्यास कर रहे हैं। इंग्लैंड की टीम अभी अबुधाबी में भारत जैसी परिस्थितियों में अभ्यास कर रही है और वह पहले टेस्ट मैच के लिए 21 जनवरी को हैदराबाद पहुंचेगी। भारत के खिलाफ 2021 की श्रृंखला में नेट गेंदबाज की भूमिका निभाने वाले रॉबिंसन को उम्मीद है कि स्टुअर्ट ब्राड के संन्यास लेने के बाद वह आगामी श्रृंखला में बड़ी भूमिका निभाएंगे। रॉबिंसन ने कहा कि मैं असल में मोहम्मद शमी की तरह सीधी सीम से गेंदबाजी करने का अभ्यास कर रहा हूं। वह भारत के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों में से एक है। मैंने इशांत शर्मा को भी गेंदबाजी करते हुए देखा है। वह ससेक्स की तरफ से कुछ समय के लिए खेला है और उसने लंबे समय तक भारत की तरफ से अच्छा प्रदर्शन किया है।

## रणजी ट्रॉफी : शिवम दुबे के आक्रामक अर्धशतक के बावजूद मुंबई 251 पर आउट

**तिरूवनंतपुरम।** भारतीय हरफनमौला शिवम दुबे ने अपना शानदार फॉर्म घरेलू सर्किट में भी जारी रखते हुए आक्रामक अर्धशतक जमाया लेकिन श्रेयस गोपाल के चार विकेट के दम पर केरल ने रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप बी के मैच में मुंबई को 251 रन पर आउट कर दिया। दुबे ने अपनी पारी में चार चौके और दो छक्के समेत 72 गेंद में 51 रन बनाए। उनके अलावा भूपेन लालवानी (63 गेंद में 50 रन) और तनुष कोटियां (105 गेंद में 56 रन) ने भी अर्धशतक जमाए। लालवानी और दुबे मुंबई को 200 रन के पार ले गए जबकि कोटियां ने 250 के पार पहुंचाया। हाल ही में अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला में प्लेयर आफ द सीरिज बने दुबे शानदार फॉर्म में दिखे। केरल के लिए गोपाल ने 18.4 ओवर में 28 रन देकर चार विकेट लिए जबकि बासिल थम्पी और जलज सक्सेना को 2-2 विकेट मिले। कोलकाता में अनुभवी अनुस्तूप मजूमदार के नाबाद 55 रन और पांचवें विकेट के लिए अभिषेक पोरेल (नाबाद 47) के साथ 79 रन की अटूट साझेदारी के दम पर बंगाल ने छत्तीसगढ के खिलाफ चार विकेट पर 206 रन बना लिए। डिब्रूगढ में असम ने आंध्र को 188 रन पर आउट कर दिया और पहली पारी में बिना किसी नुकसान के 43 रन बना लिए। आंध्र के लिए शोएब मोहम्मद खान ने 63 और नीतिश कुमार रेड्डी ने 49 रन बनाए। आंध्र के सात विकेट 70 रन पर गिर गए थे जिसके बाद इन दोनों ने सातवें विकेट के लिए 113 रन जोड़े। असम के लिये राहुल सिंह ने 46 रन देकर छह विकेट लिए जबकि मुख्तार हुसैन और आकाश सेन गुप्ता को 2-2 विकेट मिले।

## उस्मान ख्वाजा की ठुड्डी पर लगा शमर जोसेफ का बाउंसर, कप्तान पैट कमिंस ने दी मेडिकल अपडेट

**एडिलेड ।** ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने उस्मान ख्वाजा की फिटनेस पर बड़ा अपडेट दिया। वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज शमर जोसेफ की बाउंसर ख्वाजा की ठुड्डी पर लगी थी। कमिंस ने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई सलामी बल्लेबाज अभी 'ठीक लग रहा है'। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के बीच पहले टेस्ट मैच के तीसरे दिन जब मेजबान टीम एडिलेड ओवल में जीत के लिए अपनी चौथी पारी में केवल 26 रनों का पीछा कर रही थी, तो ठुड्डी पर चोट लगने के कारण ख्वाजा को रिटायर होना पड़ा था। हालांकि हेजलवुड और ट्रैविस हेड ने बल्ले से शानदार प्रदर्शन कर अपनी टीम को जीत दिला दी। उक्त घटना 7वें ओवर की तीसरी गेंद पर हुई जब बाएं हाथ के ख्वाजा को विंडीज के तेज गेंदबाज शमर जोसेफ के बाउंसर से चोट लग गई। मैच समाप्त होने के बाद कमिंस ने ख्वाजा की चोट के बारे में बात करते हुए कहा कि उनके जबड़े में थोड़ा दर्द है और अगले टेस्ट के लिए उनकी उपलब्धता निर्धारित करने से पहले उनकी स्थिति पर नजर रखी जाएगी। कमिंस ने कहा कि वह ठीक लग रहा है। जबड़े में थोड़ा दर्द है। हां, हम इस पर नजर रखेंगे लेकिन वह ठीक लग रहा है।

# एएफसी एशियन कप : इराक ने जापान को हराया, इंडोनेशिया ने जगाई उम्मीद

**दोहा।** इराक ने टूर्नामेंट के प्रबल दावेदार जापान को 2-1 से हराकर एएफसी एशियन कप के अंतिम 16 में अपनी जगह पक्की कर ली। एजुकेशन सिटी स्टेडियम में तालियों की गड़गड़ाहट से भरी भीड़ के सामने, आयमन हुसैन के पहले हाफ के दो गोलों ने चार बार के चैंपियन को चौंका दिया और इराक को दो राउंड के बाद छह अंकों के साथ ग्रुप डी में शीर्ष पर पहुंचा दिया। असनावी मंगकुलम के पहले हाफ में पेनल्टी की मदद से इंडोनेशिया ने शुक्रवार देर रात वियतनाम पर 1-0 से जीत दर्ज की।

बुधवार को होने वाले मुकाबले से पहले इंडोनेशिया, जापान के साथ तीन अंकों की बराबरी पर है और उसने नॉकआउट चरण के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीद बरकरार रखी है। एजुकेशन सिटी स्टेडियम में 38,663 प्रशंसकों के सामने महाद्वीपीय फुटबॉल टूर्नामेंट के 2007 चैंपियन इराक

ने मैच की तीव्रता और गति के साथ मजबूत शुरुआत की।

मैच के पांचवें मिनट में ही अली जैसिम के क्रॉस को आयमन हुसैन ने गोल में बदलकर इराक को 1-0 से आगे कर दिया। इराकी प्रीमियर लीग में खेलने वाले 27 वर्षीय स्ट्राइकर हुसैन ने पहले हाफ के अंतिम मिनटों में हेडर के जरिये एक और गोल किया और अपनी टीम को 2-0 से आगे कर दिया। दूसरे हॉफ में जापान ने कुछ तेजी दिखाई और कप्तान वातारू एंडो ने क्लोज-रेंज हेडर के साथ स्कोर कर अपनी टीम का खाता खोला और स्कोर 2-1 हो गया।

अंत में यही स्कोर निर्णायक साबित हुआ और इराक ने अंतिम 16 में प्रवेश कर लिया। ग्रुप सी में, ईरान ने शुक्रवार रात हांगकांग, चीन पर 1-0 की जीत के बाद एक मैच शेष रहते हुए राउंड 16 में प्रवेश किया।

12 जनवरी से 10 फरवरी तक चलने वाले एशियाई कप में छह समूहों में कुल 24 टीमें प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। समूह विजेता और उपविजेता चार सर्वश्रेष्ठ तीसरे स्थान वाली टीमों के साथ नॉकआउट चरण में आगे बढ़ेंगे।

## ऑस्ट्रेलियाई एमेच्योर गोल्फ चैंपियनशिप में 11वें स्थान पर रही अवनी प्रशांत

**नई दिल्ली।** शुरुआती तीन राउन्ड में शानदार खेल का प्रदर्शन करने वाली भारतीय गोल्फर अवनी प्रशांत को मेलबर्न के यारा यारा गोल्फ क्लब में खेले गए ऑस्ट्रेलियाई एमेच्योर चैंपियनशिप के अंतिम दिन इवन पार 73 स्कोर के साथ ताईपे की वू चेन वी के साथ संयुक्त रूप से 11वें स्थान से संतोष करना पड़ा। जापान की ममिका शिन्ची ने दो स्ट्रोक के अंतर से 10-अंडर 282 के कुल स्कोर के साथ प्रतिष्ठित खिताब जीता जबकि स्थानीय खिलाड़ी अमेलिया हैरिस उपविजेता बनीं।

मौजूदा क्वीन सिरिकिट कप चैंपियन अवनी पिछले सप्ताह ऑस्ट्रेलियन मास्टर ऑफ द एमेच्योर इवेंट में उपविजेता रहीं थीं। ऑस्ट्रेलियाई एमेच्योर चैम्पियनशिप अपने प्रदर्शन के बारे में अवनी ने कहा, ÷मुझे लगता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों से वापसी करने की मेरी क्षमता काफी बेहतर हो गई है। मैं 5वें ओवर में थी, कल 9 होल के बाद 2 डबल बोगी हुई और फिर भी 2 ओवर समाप्त किया। आज बैक 9 पर बर्डीज़ ने मेरा साथ छोड़ दिया नहीं तो और भी बेहतर प्रदर्शन हो सकता था। उन्होंने कहा कि इस सप्ताह गोल्फ कोर्स की परिस्थितियां खेल के लिए अनुकूल नहीं थी। उन्होंने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया में 2 सप्ताह खेल के लिए अच्छे थे। हालांकि प्रतिकूल परिस्थितियों में खेलने में बहुत दिक्कत होता है। इस सप्ताह परिस्थितियां बहुत कठिन थीं, बारिश और 60 किमी प्रति घंटे की हवाएं, और उसके बाद 10 डिग्री तापमान और फिर - बहुत अधिक गर्मी। और ये सब टूर्नामेंट के एक ही दिन हुआ। मैंने पहले भी तेज हवाओं में खेला है, लेकिन यहां कुछ अलग था। हमें ऐसी हवाओं का अनुभव नहीं होता है और इसलिए निर्णय करना बहुत मुश्किल हो जाता है। गेंद हवा में 40-50 गज की दूरी तक इधर उधर हो रही थी।'

## भारत से और अधिक बच्चों को टेनिस खेलते देखना पसंद करूंगा: नोवाक जोकोविच

**मुंबई।** मौजूदा ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन नोवाक जोकोविच, जिन्होंने टूर्नामेंट के 2024 संस्करण में अर्जेंटीना के टॉमस मार्टिन एचेवेरी को सीधे सेटों में हराकर जीत के साथ अपने अभियान की शुरुआत की, ने टेनिस को एक पेशे के रूप में अपनाने की इच्छा रखने वाले भारत के युवा बच्चों को संबोधित किया।

उन्होंने कहा, 'मैं विशेष रूप से बचपन में बच्चों के विकास के लिए डिज़ाइन किए गए कुछ कार्यक्रमों का हिस्सा बनना चाहता हूं क्योंकि यह कुछ ऐसा है, जिसके बारे में मैं बहुत भावुक हूं। वही हमारी नींव की आधारशिला भी है, मैं और अधिक बच्चों को रैकेट पकड़कर टेनिस खेलते हुए देखना चाहता हूँ। एक टेनिस खिलाड़ी होने के नाते, ऐसा होते देखकर मेरा दिल खुशी से भर जाएगा।' सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के विशेषज्ञ पैनलिस्ट सोमदेव देववर्मन के साथ पहले साक्षात्कार के दौरान, जोकोविच ने भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली के प्रति अपनी प्रशंसा के बारे में बात की थी। सानिया मिर्जा से बात करते हुए, 36 वर्षीय ने भारत के प्रति अपना प्यार व्यक्त करते हुए कहा,

÷मुझे लगता है कि मेरा भारत के साथ एक विशेष संबंध है। मैं वहां के लोगों से प्यार करता हूं; वे मेरे प्रति बहुत दयालु रहे हैं और दुनिया के सबसे सच्चे और सज्जन लोगों में से एक हैं। वे अपने खेल से प्यार करते हैं और जाहिर तौर पर क्रिकेट को सबसे ज्यादा फॉलो किया जाता है। लेकिन, जैसा कि मैं समझता हूं, टेनिस को पूरे देश में भी बहुत पसंद किया जाता है। उन्होंने 2014 में नई दिल्ली में रोजर फेडरर और कई अन्य टेनिस दिग्गजों के साथ एक प्रदर्शनी मैच में भाग लिया था, जिसे उन्होंने याद किया और जल्द ही देश में घूमने के अपने सपने के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा, उम्मीद है, अभी मेरे सामने कई साल हैं ताकि मैं आपके खूबसूरत देश में अधिक समय बिता सकूं और हम अधिक बच्चों को टेनिस खेलने के लिए सशक्त बनाने के मिशन पर काम कर सकें। रविवार, 21 जनवरी 2024 को ऑस्ट्रेलियन ओपन 2024 के चौथे दौर में जोकोविच का सामना फ्रांस के एड्रियन मन्नारिनो से होगा।

## बेन ड्वारशुइस ने अपनी बीबीएल सफलता का श्रेय भारत दौरे के अनुभव को दिया

**सिडनी।** सिडनी सिक्सर्स को बीबीएल फाइनल में पहुंचाने के लिए करियर का सर्वश्रेष्ठ (21 रन देकर 5 विकेट) करने के बाद, तेज गेंदबाज बेन ड्वारशुइस ने अपनी बेहतरीन फॉर्म का श्रेय ऑस्ट्रेलियाई टीम के साथ भारत के खिलाफ टी-20 में खेलने को दिया।

29 वर्षीय खिलाड़ी ने गोल्ड कोस्ट में ब्रिस्बेन हीट पर 39 रन की क्वालीफाइंग फाइनल जीत में सिक्सर्स के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ड्वारशुइस ने दिसंबर में भारत के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के लिए दो टी20 मैच खेले और पांच विकेट लिए। बीबीएल में वापसी के बाद से वह नियमित विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे हैं। अपनी टीम को फाइनल में पहुंचाने के बाद ड्वारशुइस ने कहा, मुझे लगता है कि इस समय ऑस्ट्रेलियाई व्यवस्था में माहौल कितना शांत है, यह वास्तव में अच्छा है। भारत जाना, जो टी 20 क्रिकेट के पावरहाउस हैं, और अपनी भूमिकाओं को स्पष्ट करना और निष्पादित करना आसान था। बीबीएल से कुछ हफ्तों पहले भारत में कुछ अच्छे प्रदर्शन करने से मुझे टूर्नामेंट की भरपूर

शुरुआत करने का मौका मिला। सौभाग्य से, मैं उस फॉर्म को जारी रखने में सक्षम हूं। उम्मीद है कि यह फाइनल में भी जारी रहेगा।

टूर्नामेंट की टीम में एक भी खिलाड़ी का नाम नहीं होने के बावजूद,सिक्सर्स बुधवार को एससीजी में बीबीएल फाइनल की मेजबानी करेगा। इसे नकारात्मक रूप में लेने के बजाय, ड्वारशुइस ने कहा कि यह उस संस्कृति का प्रतिबिंब था जिसे कप्तान मोइजेस हेनरिक्स और कोच ग्रेग शिपर्ड ने बनाया था। ड्वारशुइस ने कहा, टूर्नामेंट की टीम में हमारी टीम का कोई खिलाड़ी नहीं है, लेकिन अगर टूर्नामेंट की दूसरी या तीसरी टीम होती तो हमारी अधिकांश टीम वहां होती। हम एक ऐसी टीम हैं जहां जरूरत पड़ने पर हर कोई खड़ा होता है। हम गेम-इन और गेम-आउट में सिर्फ एक या दो खिलाड़ियों पर निर्भर नहीं रहते हैं। सिक्सर्स का यह सातवां बीबीएल फाइनल है, इससे पहले उन्होंने छह बीबीएल फाइनल खेले हैं और तीन जीते हैं।

## रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ पीएम ने किया खेलो इंडिया यूथ गेम्स का शुभारम्भ

**चेन्नई।** खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2023 के छठे संस्करण की रंगारंग शुरुआत हुई, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खेल मशाल जलाकर इसका उद्घाटन किया और कहा कि यह वर्ष 2024 की शुरुआत करने का एक शानदार तरीका है। तमिलनाडु के युवा कल्याण और खेल विकास मंत्री उदयनिधि स्टालिन के औपचारिक स्वागत भाषण के बाद, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने तमिलनाडु द्वारा पहली बार आयोजित किए जा रहे 2 सप्ताह लंबे खेल समारोह की जीवंत शुरुआत की, जिसके बाद प्रधानमंत्री ने अपने भाषण के अंत में खेलो इंडिया यूथ गेम्स के शुरुआत की घोषणा की।

गणमान्य व्यक्तियों के संबोधन के बाद, पीएम मोदी ने 12 जिलों में 26 रेडियो स्टेशन शुरू करने की आधारशिला रखने के अलावा 'डीडी तमिल' लोगो का अनावरण कर खेलों की मशाल जलाई। बाद में, पीएम मोदी ने तमिल में वनक्कम' (स्वागत) कहकर अपना संबोधन शुरू किया और कहा कि खेलो इंडिया गेम्स 2024 की शुरुआत करने का एक शानदार तरीका है। यह बहुत खुशी की बात है कि खेलो इंडिया यूथ गेम्स खूबसूरत शहर चेन्नई में आयोजित किए जा रहे हैं। ये खेल युवा खेल प्रतिभाओं को निखारने में मदद करेंगे। अपने संबोधन में, केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा, ÷खेलो इंडिया यूथ गेम्स जमीनी स्तर से खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रधान मंत्री द्वारा शुरू की गई एक पहल है। तमिलनाडु ने शतरंज ओलंपियाड और एशियाई हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी जैसे कई खेल आयोजनों की सफलतापूर्वक मेजबानी की है।

## क्रिकेट खेलते हुए कोई दिक्कत आए तो विराट-धोनी से करता हूं बात : गुरबाज

**दुबई ।** अफगानिस्तान के बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज़ ने खुलासा किया कि वह अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए भारत के बल्लेबाज विराट कोहली और विश्व कप विजेता पूर्व भारतीय कप्तान एमएस धोनी से बल्लेबाजी के टिप्स ले रहे हैं।

अफगानिस्तान के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई तीन मैचों की टी20 सीरीज में गुरबाज ने 3 पारियों में 87 रन बनाए। आखिरी टी20आई में, उन्होंने 32 गेंदों में अर्धशतक बनाया और इब्राहिम जादरान के साथ 93 रन की साझेदारी करके अपनी टीम को भारत के खिलाफ लड़ने का मौका दिया। गुरबाज ने कहा कि मैं हमेशा विराट और एमएस धोनी से बात करता था कि अपने क्रिकेट को कैसे बेहतर बनाया जाए। मेरे दिमाग में बहुत सी चीजें हैं और मुझे इस पर काम करना है। मैं विराट (भाई) से अपने बारे में बात कर रहा था। क्रिकेट यात्रा और मुझे कैसे आगे बढ़ना चाहिए।

# ऑस्ट्रेलियन ओपन : डिफेंडिंग चैंपियन सबालेंका, कोको गॉफ चौथे दौर में

**मेलबर्न।** गत चैंपियन आर्यना सबालेंका और यूएस ओपन विजेता कोको गॉफ ने ऑस्ट्रेलियन ओपन में शानदार जीत दर्ज करते हुए चौथे दौर में प्रवेश कर लिया है। दूसरी वरीयता प्राप्त सबालेंका ने लेसिया त्सुरेंको को 52 मिनट में 6-0, 6-0 से हराया, जबकि नंबर 4 वरीयता प्राप्त गॉफ ने साथी अमेरिकी एलिसिया पार्क्स को 61 मिनट तक चले मुकाबले में 6-0, 6-2 से शिकस्त दी। 12 महीने पहले यहां अपना पहला ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाली सबालेंका ने तीन राउंड में सिर्फ छह गेम गंवाए हैं। सबालेंका ने मजाक में कहा, पिछले साल, इगा (स्विएटेक) ने कई सेट 6-0 से जीते थे और उसके करीब पहुंचने की कोशिश करना एक लक्ष्य है। मैं अब तक जिस स्तर पर खेल रही हूं उससे बहुत खुश हूं। उम्मीद है कि मैं ऐसे ही या उससे भी बेहतर तरीके से आगे बढ़ती रहूँगी। चौथे दौर में सबालेंका का मुकाबला अमांडा अनिसिमोवा से होगा, जिन्होंने पाउला बडोसा पर 7-5, 6-4 से जीत के साथ अपनी वापसी जारी रखी। सोलह वर्षीय मीरा एंड्रीवा ने ऑस्ट्रेलियाई ओपन में अपना उल्लेखनीय पदार्पण जारी रखा जब उन्होंने तीसरे सेट में 5-1 से पिछड़ने के बाद डायने पैरी को 1-6, 6-1, 7-6 (5) से हरा दिया। रूसी खिलाड़ी जब हार से

एक गेम दूर थीं तब उसकी आंखों में आंसू थे, लेकिन उसने शानदार वापसी करते हुए 2-5 के स्कोर पर एक मैच प्वाइंट बचाया और फिर निर्णायक टाईब्रेक 10-5 से जीत लिया। एंड्रीवा का अगला मुकाबला नंबर 9 बारबोरा क्रेजिसिकोवा से होगा, जिन्होंने एक रात के मैच में स्टॉर्म हंटर को 4-6, 7-5, 6-3 से हराया। पुरुष एकल वर्ग में नोवाक जोकोविच ने ऑस्ट्रेलियन ओपन में अपने 100वें मैच में टॉमस मार्टिन एचेवेरी पर 6-3, 6-3, 7-6 (2) से जीत के साथ रात के सत्र की शुरुआत की।नंबर 4 जननिक सिनर, जिन्होंने पिछले साल के अंत में जोकोविच पर दो जीत हासिल की थी, सेबस्टियन बेज पर 6-0, 6-1, 6-3 की जीत की बदौलत बिना कोई सेट गंवाए चौथे दौर में पहुंच गए। इटालियन सिनर ने नेट पर 25 में से 18 अंक जीते, चौथे दौर में उनका सामना 15वीं वरीयता प्राप्त करेन खाचानोव के साथ होगा,जिन्होंने टॉमस मचाक को 6-4, 7-6 (4), 4-6, 7-6 (5) से हराया। नंबर 7 स्टेफानोस सितसिपास ने भी उतना ही प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए लुका वान एश को 6-3, 6-0, 6-4 से हराया। उनका मुकाबला नंबर 12 टेलर फिट्ज से होगा, जिन्होंने फैबियन मोरोज़सन को 3-6, 6-4, 6-2, 6-2 से हराया।

# जका अशरफ ने पीसीबी के अंतरिम प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पद से दिया इस्तीफा

**लाहौर।** जका अशरफ ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) का नेतृत्व करने वाली संस्था अंतरिम प्रबंधन समिति (आईएमसी) के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है। ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार, उन्होंने लाहौर में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में समिति की चौथी बैठक के बाद अपने फैसले की घोषणा की। पीसीबी ने अभी तक यह घोषणा नहीं की है कि बोर्ड का प्रशासन कौन संभालेगा। पिछले साल नवंबर में, बोर्ड के संरक्षक और पाकिस्तान के वर्तमान अंतरिम प्रधान मंत्री अनवर उल हक काकर द्वारा दी गई एक सरकारी अधिसूचना के माध्यम से अशरफ को पीसीबी के प्रमुख

के रूप में बने रहने के लिए तीन महीने का विस्तार दिया गया था। उन्हें मूल रूप से पिछले साल जुलाई में आईएमसी का प्रमुख नियुक्त किया गया था, और दस सदस्यीय निकाय का काम बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (बीओजी) को अंतिम रूप देना और चार महीने के भीतर बोर्ड अध्यक्ष पद के लिए चुनाव कराना था। हालाँकि, जब वह लक्ष्य समय सीमा के भीतर हासिल नहीं किया जा सका, तो समिति को ऐसा करने के लिए और तीन महीने का समय दिया गया। अशरफ का कार्यकाल विवादों में रहा है, समिति के एक सदस्य ने उन पर घोर कदाचार और असंवैधानिक निर्णय का आरोप लगाया है। अशरफ के अलावा, आईएमसी के अन्य नौ सदस्य कलीम उल्लाह खान, अशफाक अख्तर, मुहम्मद मुसादिक इस्लाम, अजमत परवेज, जहीर अब्बास, ख्वाजा नदीम, मुस्तफा रामदे, जुल्फिकार मलिक और खुर्रम करीम सोमरू हैं।

## एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर्स : जापान ने तोड़ा भारतीय महिला टीम का पेरिस जाने का सपना, 1-0 से हराया

**रांची।** भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर रांची 2024 में तीसरे और चौथे स्थान के कड़े प्लेआफ मुकाबले में जापान से 0-1 से हार गई। इस हार के साथ भारतीय महिलाएं चौथे स्थान पर रहीं और 2024 पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालिफाई करने से चूक गईं। जापान ने मैच की शुरुआत में ही बढ़त बना ली। शुरुआती मिनटों के भीतर ही उसे दो पेनल्टी कॉर्नर मिले। हालांकि पहले वाले को गोल में तब्दील नहीं किया जा सका लेकिन कारन उराटा ने छठे मिनट में सुनिश्चित किया कि दूसरा प्रयास बेकार न जाए। इस तरह जापान ने पहले ही क्वार्टर में बढ़त बना ली। भारत को कुछ पेनल्टी कॉर्नर मिले और दूसरे क्वार्टर में भारतीय खिलाड़ियों ने कुछ मौकों पर विपक्षी टीम के सर्कल में एंट्री भी की, लेकिन वे किसी भी अवसर को गोल में बदलने में असमर्थ रहीं। पहले हाफ में जापान ने 1-0 की बढ़त के साथ ब्रेक लिया। तीसरे क्वार्टर की शुरुआत में भारतीय टीम पेनल्टी कॉर्नर के जरिए बराबरी के करीब पहुंची, लेकिन जापान की गोलकीपर अकीओ तनाका ने सुनिश्चित किया कि गेंद नेट के पीछे न जाए। भारतीय खिलाड़ी जापान पर आक्रमण करती रही लेकिन जापानी डिफेंस ने टस से मस नहीं किया और अंतिम क्वार्टर तक अपनी मामूली बढ़त बरकरार रखी। समय बीतने और ओलंपिक क्वालीफिकेशन का मौका करीब आने के साथ, भारतीय टीम को नया जोश आया। उसने अंतिम क्वार्टर में एक के बाद एक कई पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए। भारतीय टीम बार-बार बराबरी के करीब आई लेकिन जापान के डिफेंडरों ने सुनिश्चित किया कि वे अपनी एक गोल की बढ़त को बरकरार रखेंगी और 1-0 से मैच जीतकर तीसरे स्थान पर रहेंगी और 2024 पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करेंगी।

अंततः जापान अपने प्रयास में सफल रहा और भारतीय टीम को निराशा हाथ लगी।

# ग्राम पंचायत भुलगवा टीम ने ग्राम नचने में दिखाया काफी शानदार प्रदर्शन

**पुष्पांजलि टुडे**
**प्रशांत उपाध्याय**
**तहसील रिपोर्टर नागौद**

ग्राम पंचायत नचने में टूर्नामेंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया इसमें दिन रविवार को भुलगवा 1/ह्य भाटिया का टूर्नामेंट का मुकाबला किया गया।। भुलगवा एकादश के कप्तान शुभम मिश्रा मद्धु महाराज और उप कप्तान भोला मिश्रा के द्वारा कप्तानी संभाली गई।। जिसमें टीम ने टॉस जीते हुए गेंदबाजी का फैसला किया।। भुलगंवा टीम के कप्तान मद्धू महाराज और भोला मिश्रा ने गेंदबाजी का निर्णय लिया।। जिसमें भुलगंवा टीम द्वारा शानदार गेंदबाजी की गई।। फिर इसके बाद भुलगवा टीम बैटिंग के लिए उतरी बेटिंग में रामसुफल दुबे उर्फ एम एस धोनी और बल्लू शुक्ला ? उर्फ चेतेश्वर पुजारा को ओपनर तौर में भेजा गया।। टीम के कप्तान मद्धु राजा और उप कप्तान भोला मिश्रा द्वारा ओपनिंग जाते ही लगातार तीन छक्के मारने पर दोनों बल्लेबाजों को?11000 का नगद पुरस्कार रखा गया। ।और लगातार तीन चौका मारने



पर 5100 का नगद पुरस्कार दिया जाएगा ।। जब दोनों उपनरों द्वारा लगातार अच्छी बल्लेबाजी नहीं दिखाई तो भुलगवा टीम के कप्तान और उप कप्तान ने लगातार दो छक्के मारने पर 11000 का नगद पुरस्कार बढ़ाया ।।लेकिन दोनों ही ओपनर असफल रहे। फिर दूसरे नंबर के खिलाड़ी ऋषि भैया को भेजा गया तो फिर कप्तान मद्धु राजा और उप कप्तान द्वारा खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हुए लगातार तीन छक्के मारने पर ?15000 की राशि बढ़ा दी गई




।।लेकिन ऋषि भी इस राशि को लेने में असफल रहे ।।फिर तीसरे नंबर पर सौरभ पाठक को भेजा गया।। लेकिन सौरभ पाठक भी इस सम्मानजनक राशि को लेने में असफल रहे ।।मद्धु राजा और भोला मिश्रा के द्वारा लगातार चार छक्के मारने पर 21000 की राशि बढ़ा दी गई ।लेकिन भुलगवा एकादश टीम के खिलाड़ी इस राशि को प्राप्त नहीं कर पाए।। जिसमें नचने टूर्नामेंट के अध्यक्ष द्वारा मद्धु महाराज और भोला मिश्रा उप कप्तान का काफी सम्मान किया गया ।।और और यह बताया गया कि नचने के इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी राशि बोलने वाले पहले कप्तान और उप कप्तान होंगे ।।मधु राजा और भोला मिश्रा आज तक के टूर्नामेंट में नाचने में लगातार कई वर्षों से टूर्नामेंट खिलाया जा रहा है लेकिन आज तक के इतिहास में किसी भी कप्तान ने लगातार तीन छक्के मारने पर 21000 की राशि नहीं रखी है ।।पहले कप्तान होंगे भूलगवा के जिन्होंने इतनी बड़ी राशि रखकर अपने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया ।। शुभम मिश्रा और भोला मिश्रा अपने भुलगवा टीम के काफी अच्छे कप्तान और उप कप्तान माने जाते हैं ।।क्षेत्र में जाने-माने कप्तान है कई वर्षों का अनुभव उनके पास है।। इतिहास में पहली बार गा्म नचने

में इतनी बड़ी राशि रखने वाले पहले कप्तान होंगे शुभम मिश्रा मदृधु महाराज और उप कप्तान भोला मिश्रा।।

# सेंणचा परिवार का स्नेह मिलन 28 को-विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा



**दैनिक पुष्पाजंली टुडे**

**बेंगलूरु/** कर्नाटक तमिलनाडु के प्रवासी सेंणचा भगत परिवारों में आपसी समन्वय बढ़ाने, जु?ाव को मजबूती देने तथा आपसी नेटवर्किंग का विस्तार करने के उद्देश्य से सेंणचा भगत परिवार का आगामी 28 जनवरी को हॉलिडे रेसिडेंसी रिसॉर्ट में तीसरा स्नेह मिलन आयोजित किया जाएगा7 गांधी नगर स्थित सेंणचा भवन में रविवार को आयोजित बैठक में इस संबंध में चर्चा हुई बैठक में स्नेह मिलन समारोह के लिए सभी सदस्यों ने विचार व्यक्त किए संस्था के अध्यक्ष मोहनलाल सेंणचा ने बताया कि इस बार सेंणचा परिवार का स्नेह मिलन टी बेगूर तुमकुरु रोड़ स्थित हॉलिडे रेजिडेंन्सी रिसॉर्ट में 28 जनवरी को रखा गया है इस स्नेह मिलन में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाएगा होसूर से पधारे रूपाराम सेंणचा ने कहा कि सेंणचा परिवार का स्नेह मिलन धूम-धाम से मनाया जाएगा इसके लिए अलग अलग समिति बनाकर कार्य सौंपा गया है संस्था के कोषाध्यक्ष वचनाराम सेंणचा ने बताया कि स्नेह मिलन में बच्चों के लिए कई प्रकार के खेल आयोजित किए जाएंगे इस मौके पर मांगीलाल सेंणचा, चिमनाराम सेंणचा, शेषाराम सेंणचा, अमराराम सेंणचा, उम्मेदराम सेंणचा, वेनाराम सेंणचा, महेन्द्र सेंणचा, मनोहर सेंणचा, उमाराम सेंणचा, राजुराम सेंणचा, सुरेश, थानाराम और टी रमेश सेंणचा मौजूद थे।

# प्रतिबंधित मशीनों से नदी की जलधारा मे खनन कारोबारी कर रहे खनन,एन.जी.टी. नियमो को ताक मे रखकर किया जा रहा खनन

बांदा। जिले में बालू खदान संचालक बेखौफ हो कर नियम विरुद्ध खनन करने में जुटे हुए हैं साथ ही प्रतिबंधित मशीनों से अवैध खनन कर ही रहे हैं और कई बार नदी की जलधारा में भी खनन करने की तस्वीरें सामने आई हैं अब इतने बेखौफ हो गए हैं की अब जुर्म करने से भी नही कतरा रहे हैं। ऐसी ही तस्वीरें महुटा बालू खदान से सामने आई हैं जहां खदान संचालक नदी की जलधारा में रास्ता बनाने के लिए नीम के पेड़ काट रहे हैं और उसकी लकड़ियां नदी में डालकर पत्थरों से मूंद रहे हैं नदी किनारे नीम की पत्तियों की झाड़ साफ तौर पर देखी जा सकती हैं साथ ही यह जानकारी ग्रामीणों ने भी दी है और यह सब हो रहा प्रशासन की सह पर।अतर्रा थाना अंतर्गत महुटा बालू खदान में बालू खदान संचालक नदी की जलधारा प्रभावित कर अवैध पुल तो बना ही रहे हैं साथ ही उसमे नीम की लकड़ियों का इस्तेमाल कर रहे हैं जो की कानूनी जुर्म है किसी भी परिस्थितियों में प्रशासन की बिना अनुमति के नीम के पेड़ को काटा नहीं जा सकता लेकिन महुटा खदान संचालक नीम के पेड़ काट रहे हैं और नदी पर अवैध पुल बना रहे हैं

# जनपद पंचायत बरमकेला के समस्त ग्राम पंचायत भवन मे लटका ताला,भटकने को मजबूर हैं जरूरतमंद.. जिम्मेदार अधिकारी मौन भुगत रहे ग्रामीण

**सारंगढ़ /** सारंगढ़ जिला अंतर्गत जनपद पंचायत बरमकेला मे 96 ग्राम पंचायत हैं जिसमे लाखो रुपए खर्च कर गांव मे रहने के लिए सचिवों के लिए सचिवालय व कार्यालय बनाए गए है, इन सभी सचिवालय व कार्यालय पर हमेशा ताले लटकते रहते हैं, इससे पंचायती राज व्यवस्था कि खुलेआम धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं, भारत सरकार द्वारा गांव के लोगों का जीवन स्तर उठाने के लिए विभिन्न तरीको से प्रयास जारी है लेकिन इसके लिए इस व्यवस्था को संचालित करने के लिए तैनात




अधिकारी व कर्मचारी इसे नजर अंदाज कर खुले तौर पर मखौल उड़ा रहें हैं। बहरहाल सरकार द्वारा लाखों की लागत से हर ग्राम पंचायत स्तर पर सचिवालय व कार्यालय बनाया गया है लेकिन जनपद सीईओ बरमकेला के लापरवाही के चलते पंचायत भवन कभी नहीं खुलता, पंचायत भवनो के कुर्सी टेबल धूल खा रहें हैं, पंचायत सचिवो को दो, तीन ग्राम पंचायत का प्रभार दिया गया है, जबकि देखा जाए तो अधिक से अधिक गांव के प्रभार लेने के लिए पंचायत सचिवों द्वारा हर संभव कोशिश की जाती है। इसमें सबसे अहम बात यह है कि इन पंचायत कर्मचारी के कार्य क्षेत्र वाले गांव एक दूसरे से सटे होते हुए भी कभी गांवों में नहीं रहते। कई ऐसे सचिव हैं जिनको गांव वाले देखना तो दूर नाम तक नहीं जानते, सचिव अपने थैले मे पूरा पंचायत राज ले के घूमते हैं जिससे ग्रामीण दर दर भटकने को मजबूर हैं,

**क्या कहा सचिव संघ के ब्लॉक अध्यक्ष ज्योत्स्ना पटेल** - शासन के योजनाओं का हमारे द्वारा क्रियान्वयन हेतु हमेशा प्रयास किया जा रहा है, हमें जनपद सीईओ के द्वारा इतना काम दिया जा रहा है कि हमें पंचायत भवन खुलने का फुरसत भी नहीं मिल पाता,और तो और सीईओ के द्वारा हमें छुट्टी के दिन मे भी काम करवाया जा रहा है जिससे पंचायत भवन जाने का मौका नहीं मिल पाता

# विकासखंड मालखरौदा के ग्राम चारपारा में आमजनों के जीवन शैली को बेहतर बनाने हेतु स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वास्थ्य शिविर का किया गया आयोजन

## स्वास्थ्य शिविर में पहुंचे सक्ती जिले की कलेक्टर नूपुर राशि पन्ना और एसपी एम आर अहिरे

**सक्ती** श्रीमती नूपुर राशि पन्ना के निर्देशन में स्वास्थ्य विभाग द्वारा विगत दिवस विकासखंड मालखरौदा के ग्राम चारपारा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य शिविर में सक्ती जिले की कलेक्टर श्रीमती नूपुर राशि पन्ना और एसपी एम आर अहिरे भी पहुंचे। ग्राम वासियों हेतु स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ सुरज सिंह राठौर की उपस्थिति में चिकित्सकों के साथ स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। जिसमे ग्रामवासियों का बीपी, शुगर, सिकल सेल जांच, वायरल मार्कर जांच की गई तथा जिला कलेक्टर और एसपी द्वारा ग्रामवासियों के खान पान जीवन शैली , शिक्षा , खेल कूद के विषयों पर चर्चा किया गया। कलेक्टर और एसपी ने शिविर में उपस्थित ग्रामीणजनों की समस्याओं को सुना तथा नशा मुक्ति हेतु ग्रामवासियों को संकल्पित कराते हुवे ग्राम के



युवा पीढ़ी को किसी भी प्रकार का नशा न करने के लिए आवश्यक पहल करने के संबंध में चर्चा किए। जिससे ग्रामवासियों में काफी उत्साह का माहोल था। इस अवसर पर चारपारा निवासी रामनामी प्रवर्तक खोलबहरा राम ,राम कुमार भारती, ज्ञान बाई भक्तिन ने बताया कि राम नाम को पूरे शरीर के अंगो में गोदने के माध्यम से मनुष्य खुद को प्रभु राम जी के सेवा में समर्पित कर देता है। इसकी शुरुआत परसुराम बाबा ने किया था। जिसके बाद इसके अनुयायी आज विभिन्न जिले में रहते है प्रतिवर्ष भजन मेला आयोजन किया जाता है। जहा राम नामी राम भजन गान कर लोगो को राम कथा का ज्ञान कराते आ रहे हैं। उनके बताए अनुसार वर्तमान समय में युवा पीढ़ी इनसे दूर हो रही है जससे आने वाले भविष्य में रामनामीयों की संख्या में कमी आ रही है । चार पारा में वर्षो पुरानी राम भजन मेला हेतु रामनाम भवन भी निर्मित है।

# श्री राजेन्द्र सिंह इंटरनेशनल स्कूल ने 2-1 किया सीरीज पर कब्जा

श्री राजेन्द्र सिंह मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट का आखिरी मैच श्री राजेन्द्र सिंह इंटरनेशनल स्कूल एवं संतसार पब्लिक के मध्य खेला गया ।आज के मैच में श्री राजेन्द्र सिंह इंटरनेशनल के निदेशक अक्षत सिंह ,प्रधनाचार्य आई पी दुबे ,उप प्रधनाचार्य प्रीति सिंघल द्वारा खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर टॉस कराया ।प्रधनाचार्य आई पी दुवे ने बताया खिलाड़ियों को खेल के प्रति सचेत रहना चाहिए खेल ही एक ऐसा आयाम है जिससे विकास हो सकता है उसी के साथ बताया कि शिक्षा हो या खेल एक नए आयाम तक लेकर जा रहे है जिसमे खेल एवं शिक्षा को बड़ावा मिल रहा है खिलाड़ी अपना प्रदर्शन कर रहे है सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देता हूं।आखिरी मैच में संतसार स्कूल ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया ।बल्लेवाजी करते हुए 20 ओवर में




5 विकेट पर 112 रन बनाए ।जिसमे रोहित कुमार 53 रन ,विकास शर्मा 15 रन,चेतन राघव 17 रनो का योगदान दिया ।गेंदबाजी करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह इंटरनेशनल स्कूल की ओर से अथर्व वार्ष्णेय 2 विकेट ,नमन गुप्ता 1 विकेट ,अकुल गर्ग 1 ने विकेट लिए।लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्री राजेन्द्र सिंह इंटरनेशनल स्कूल की टीम 20 ओवर में 7 विकेट खो कर 94 रन ही बना सकी ।जिसमे यथार्थ लोधी 36 रन ,यश वर्मा 12 रन , आदित्य शर्मा 11 रनो का योगदान दिया ।गेंदबाजी करते हुए संतसार पब्लिक स्कूल की ओर से रुद्र 2 विकेट,विकास शर्मा 2 विकेट ,मयूर कुमार 1 विकेट लिए।खिलाड़ियों को ट्रॉफी एवं मैडल देकर सम्मानित किया गया।संतसार पब्लिक स्कूल ने 18 रनो से ये मैच जीत लिया।यश वर्मा को बेस्ट बैट्समैन चुना गया , अकुल गर्ग को बेस्ट बॉलर चुना गया, विकाश शर्मा को मैन ऑफ द सीरीज चुना गया।रोहित कुमार को मैन ऑफ द मैच चुना गया।इस मौके पर सफाली कपूर ,रिंकू दीक्षित ,मेघराज सिंह ,रवि कुमार ,नरेश राजपूत ,अब्दुल्लहा शाकिर मौजूद रहे।

# अधिक संख्या में मातृ वंदन योजना के लाभु को जोड़ने की नसीहत

**-स्वास्थ्य समीक्षा बैठक में विभिन्न कार्यक्रमों पर हुई चर्चा**

**-फाइलेरिया अभियान में सजग रहकर जागरुकता का निर्देश**

**वैशाली।** 20 जनवरीस्वास्थ्य सेवाओं में हुए कार्य और उनकी बेहतरी के लिए समाहारणालय सभागार में शनिवार को मासिक समीक्षात्मक बैठक की गयी। इस बैठक की अगुवाई जिलाधिकारी यशपाल मीणा के निर्देश पर उप विकास आयुक्त चित्रगुप्त कुमार ने की। उप विकास आयुक्त कुमार ने समीक्षा बैठक के दौरान स्वास्थ्य के विभिन्न मानकों के डेटा को और समृद्ध करने के निर्देश के साथ मातृ वंदन योजना के तहत प्रखंड स्वास्थ्य प्रबंधकों को और लाभुकों को जोड़ने को कहा। उन्होंने कहा कि इस योजना से ज्यादा संख्या में महिलाओं के जुड़ने से गर्भवती एवं बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण को बल मिलेगा। इसके अलावा डीडीसी ने परिवार नियोजन, शिशु टीकाकरण में वृद्धि करते हुए भविष्य में इसके समृद्ध आंकड़ों की मंशा जाहिर की। सिविल सर्जन डॉ श्यामनंदन प्रसाद ने डीडीसी को बताया कि अभी जिला प्रेग्नेंट वीमेन और चाइल्ड रजिस्ट्रेशन में राज्य में तीसरे नंबर पर है। डीडीसी ने मातृ किशोरी एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए बुनियादी सुविधाओं को और दुरुस्त करने को कहा। समीक्षा बैठक के दौरान अल्ट्रासाउंड, एनएसभी पखवाड़ा, ब्लड कैंप, ओपीडी चाइल्ड इम्युनाइजेशन सहित अन्य कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी।

**फाइलेरिया अभियान में अधिक से अधिक को करें जागरुक**-डीडीसी ने 10 फरवरी से शुरु होने वाले फाइलेरिया अभियान को एक सुदृढ़ माइक्रोप्लान के तहत अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की बात कही। इससे दवा खाने की स्वीकार्यता में तेजी के साथ फाइलेरिया उन्मूलन को भी सही दिशा मिलेगी। बैठक में सिविल सर्जन डॉ श्यामनंदन प्रसाद, एसीएमओ डॉ अनिल शर्मा, डीआइओ डॉ उदय नारायण सिंहा, डीपीएम डॉ कुमार मनोज, डीसीएम डॉ निभा रानी सिंहा, पिरामल प्रतिनिधि, हेल्थ एजुकेटर राकेश कुमार सिंह सहित अन्य स्वास्थ्यकर्मी सहित पदाधिकारी मौजूद थे।

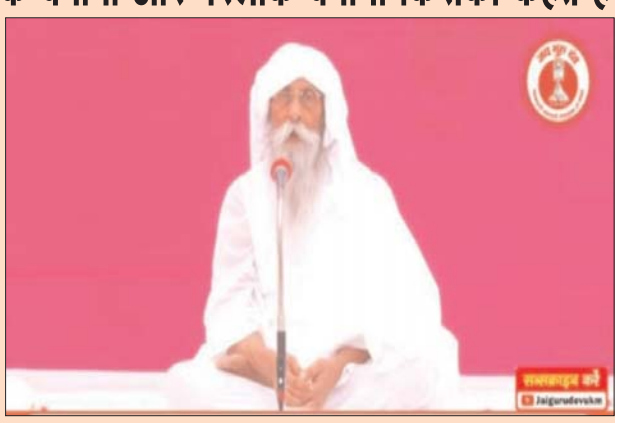

# मृत्यु के बाद शरीर को चलाने वाली जीवात्मा कहां जाएगीड़ इसके लिए भी स्थान बनाने की जरूरत है सन्त बाबा उमाकान्त जी ने बताया लोक बनाना और परलोक बनाना किसको कहते हैं



**उज्जैन (म.प्र.)**लोक और परलोक दोनों बनाने वाले, अपनी सभी जिम्मेदारियों को सरलता से सफलतापूर्वक निभाने का तरीका बताने वाले, जीवात्मा को उसके स्थाई स्थान तक पहुँचाने वाले, पूरे समरथ सन्त सतगुरु, दुःखहर्ता, उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त महाराज जी ने अधिकृत यूट्यूब चैनल जयगुरुदेवयूकेएम पर लाइव प्रसारित संदेश में बताया कि लोक बनाना किसको कहते हैंड़ अच्छा मन के मुताबिक खाने को मिल जाए, जो खाये वो हजम हो जाए, रहने के लिए घर में संतुष्टि की जगह हो जाए, कहते हैं यहाँ आराम है, ठीक है, कपड़ा ऐसा मिल जाए पहनने को जिससे सम्मान में कमी न आवे, जिस स्तर पर आदमी रहता है उस स्तर पर कपड़ा ऐसा पहन ले कि उसका सम्मान बना रहे। मान-सम्मान, कपड़ा, धन यही तो आदमी को चाहिए, इसी को तो लोक बनाना कहते हैं। औरत पतिव्रता हो, पुत्र आज्ञाकारी हो, एक पत्नी धारी पति हो तो समझो यही लोक बनना होता है। कम कमाये और बरकत ज्यादा दिखाई पड़े, खर्चा भी चल जाए और दो रुपया भी बच जाए। तो कहते हैं कोई दिक्कत नहीं है, लोक बना हुआ है। परलोक बनाना- यह जीवात्मा ऊपरी लोकों में आने-जाने लग जाए, उस प्रभु के पास पहुंचने लग जाए, वहां इसका आना-जाना शुरू हो जाए, ऊपर की जानकारी हो जाए, परा विद्या का ज्ञान हो जाए, पराधन की प्राप्ति हो जाए तो उसको परलोक बनाना कहते हैं। (ये दोनों बनना वडूत के समरथ गुरु के हाथ में होता है)

**गृहस्थ आश्रम की जिम्मेदारी क्या होती है**-गृहस्थ आश्रम में आप रहते हो, रहो और जो आपकी गृहस्थ आश्रम की जिम्मेदारी है, उसको निभाओ। बाल-बच्चों की देखरेख, बच्चियों पति की, सास-ससुर की सेवा, बच्चों माता-पिता की सेवा, यह करना एक गृहस्थ का धर्म होता है। इसको बराबर करते रहो। लेकिन इसमें से समय निकाल करके 15 दिन-महीने में एक बार ऐसे स्थान पर जहां सतसंग, साधन भजन होता हो, वहां पर चले आना चाहिए।

**जो पैदा होता है वह मरता है**-कोई नहीं बचा, सबको जाना पड़ा। बाली, विक्रमदेव, दाधीच गए, पारस गए...। जो पेड़ फलता है, वह झड़ता है। जो आग जलती है, वह बुझती है। जो पैदा होता है, वह मरता है। दधीचि ने अपनी हड्डी का दान देवासुर संग्राम में दे दिया था। दुर्योधन की 64 कोस में छतरी थी। दुर्योधन चले गए। बड़े-बड़े चले गए तो सोचो आप (इस दुनिया से) नहीं जाओगेड़ जो मनुष्य शरीर में आया, जाना सबको पड़ेगा। आप सतसंगी, धर्म प्रेमी हो, आप सोचो, आप कहां जाओगे। शरीर को तो लोग मिट्टी कहकर ले जाकर के राख करके चले आते हैं लेकिन यह शरीर को चलाने वाली जीवात्मा यह कहां जाएगीड़ इसके लिए भी आपको कोई स्थान बनाने की जरूरत है। जो माया रुपी मधु, इंद्रियों का भोग है, इसमें मत फंसो। देखो रहना चाहिए सब, लेकिन निमित्त मात्र।

# सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली की अगुवाई रक्षित निरीक्षक कोरबा अनथराम पैकरा के द्वारा की जा रही थी इस रैली में लगभग 350 लोगों ने हिस्सा लिया

यातायात पुलिस के द्वारा यातायात सड़क सुरक्षा माह 2024 के तहत ष्टस्क्क चौक से टीपी नगर चौक तक जागरूकता रैली निकाली गया जिसमें ष्टढ्ढस्स्न के जवान, पुलिस एवं नगर सेना के जवान, कैडेट एवं स्कूल के छात्र-छात्राएं और शहर के नागरिकों ने हिस्सा लिया यातायात पुलिस और हस्स् के छात्र-छात्राओं के द्वारा शहर के विभिन्न चौक चौराहों पर ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर यातायात नियमों का पालन करने के लिए राहगीरों को बताया गया यातायात नियमों का पाठ पढ़ने के लिए पुलिस का साथ देने अब ऑटो संघ ने भी इस महिम में अपना साथ दिया

# कर्म कीजिए भाग्य आपका गुलाम बन जाएगा

**बहुत से लोग इस बात का रोना रोते रहते हैं कि उनका भाग्य ही खराब है। नसीब नहीं साथ दे रहा है इसलिए किसी काम में सफलता नहीं मिलती है। जबकि सच यह है कि भाग्य तो कर्म के अधीन है। हाथ की लकीरों में अपने भाग्य को ढूंढने की बजाय अगर हम हाथों को कर्म करने के लिए प्रेरित करें तो भाग्य रेखा खुद ही मजबूत हो जाएगी और हम वह पा सकेंगे जिसकी हम चाहत रखते हैं।**

### कर्म के अनुसार बदलती हैं रेखा

हस्त रेखा विज्ञान के अनुसार कुछ रेखाओं को छोड़ दें तो बाकी सभी रेखाएं कर्म के अनुसार बदलती रहती है। अपनी हथेली को गौर से देखिए कुछ समय बाद रेखाओं में कुछ न कुछ बदलाव जरूर दिखेगा इसलिए कहा गया है कि रेखाओं से किस्मत नहीं कर्म से रेखाएं बदलती हैं।

### सकल पदारथ एहि जग माहि

गोस्वामी तुलसीदास जी कर्म के मर्म को बखूबी जानते थे तभी उन्होंने कहा है सकल पदारथ एहि जग माहिं। कर्महीन नर पावत नाहिं।। तुलसीदास जी ने अपनी दोहा में स्पष्ट किया है कि इस संसार में सभी कुछ है जिसे हम पाना चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं लेकिन जो कर्महीन अर्थात प्रयास नहीं करते इच्छित चीजों को पाने से वंचित रह जाते हैं।

### सिंह को भी आलस्य त्यागना होगा

नीतिशास्त्र में कहा गया है कि न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥ इसका तात्पर्य यह है कि सिंह अगर शिकार करने न जाए और सोया रहे तो मृग स्वयं ही उसके मुख में नहीं चला जाएगा। यानी सिंह को अपनी भूख मिटानी है तो उसे आलस त्यागकर मृग का शिकार करना ही पड़ेगा। इसी प्रकार हम सभी को जिस चीज की, जिस मंजिल की तलाश है उसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रयास का फल देर से मिल सकता है लेकिन परिणाम आपके पक्ष में होगा यह मानकर सही दिशा में प्रयास करते रहना चाहिए।

### पृथ्वी यानी कर्म की भूमि

शास्त्रों में पृथ्वी को कर्म भूमि कहा गया है। यहां आप जैसे कर्म करते हैं उसी के अनुरूप आपको फल मिलता है। भगवान श्री कृष्ण ने ही गीता में कर्म को ही प्रधान बताया है और कहा है कि हम मनुष्य के हाथों में मात्र कर्म है अतः हमें यही करना चाहिए। फल क्या होगा वह हमें भगवान पर छोड़ देना चाहिए। भगवान अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करते हैं इसलिए जो जैसा कर्म करता है उसे उसका उसे वैसा ही फल देते हैं। सीधी बात यह है कि कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा। अर्थात जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता हैं।

# जैसा सोचेंगे वैसा ही परिणाम मिलेगा आपको

अगर आप दुःखी हैं तो इसका जिम्मेदार कोई और नहीं है बल्कि आप खुद हैं। इसी प्रकार अगर आप सुखी है तो यह भी आपको अपने ही कारण प्राप्त हुआ है। ईश्वर का आपके सुख-दुःख से कोई लेना देना नहीं है। ईश्वर तो मात्र कर्म का फल प्रदान करने वाला है। यूं समझ लीजिए कि ईश्वर कमल का पुष्प है। कमल पुष्प जैसे कीचड़ में रहकर भी कीचड़ के गुण दोष से प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार ईश्वर सब में और सब के बीच में रहकर भी किस से न तो मित्रता करता है और न शत्रुता। आप जैसा करेंगे और जैसा चाहेंगे वैसे ही आपके आस-पास का वातावरण तैयार कर देगा।

हस्तरेखा विज्ञान भी भविष्य को जानने का एक माध्यम है। लेकिन अगर आप अपने हाथों को गौर से देखें तो पाएंगे कि समय-समय पर हाथों की रेखाओं में परिवर्तन हो रहा है। यह परिवर्तन आपके कर्म और व्यवहार के अनुरूप होता है। इसलिए अगर आप सोचते हैं कि एक बार जो किस्मत में लिखकर आ गया है ऐसा होना तय है तो मन से इस धारणा को निकाल दीजिए। अगर ऐसा होता है तो ज्योतिषशास्त्र से सिर्फ भविष्य देखा जा सकता था। लेकिन ज्योतिषशास्त्र में भविष्य देखने के साथ ही साथ उपाय भी बताये जाते हैं ताकि घटना में बदलाव किया जा सके।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि उद्धारेदात्मनात्मानं नात्मानवसादयेत। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।। अर्थात मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और मित्र है। मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं को पतन से बचाये और संसार रूपी समुद्र से उद्धार के लिए प्रयास करे। जो मनुष्य स्वयं का मित्र होता है वह सकरात्मक सोच रखता है और ईश्वर ने जो भी साधन प्रदान किये हैं उसी से संतुष्ट होकर उन्नति के लिए प्रयास करता है। इसके विपरीत जो लोग साधन हीनता का रोना रोते रहते हैं और उन्नति के प्रयास नहीं करते हैं वह स्वयं ही अपने शत्रु हैं। वेद में कहा गया है कि उद्यानं ते पुरुष नावयनम्। यानी हे पुरूष! तुझे ऊपर उठना है न कि नीचे गिरना। इसलिए मनुष्य को हमेशा उन्नति के लिए ऊपर उठने के लिए प्रयास करना चाहिए। नकारात्मक सोच रखने से मन दुःखी होता है और क्रोध बढ़ता है। वाणी में प्रेम और मधुरता नहीं रह जाती है। अनायास ही कोई गलत कार्य कर बैठते हैं। इसलिए सोच बदलिए और उन्नति के लिए प्रयास कीजिए। जैसा आप सोचेंगे वैसा हो जाएगा।

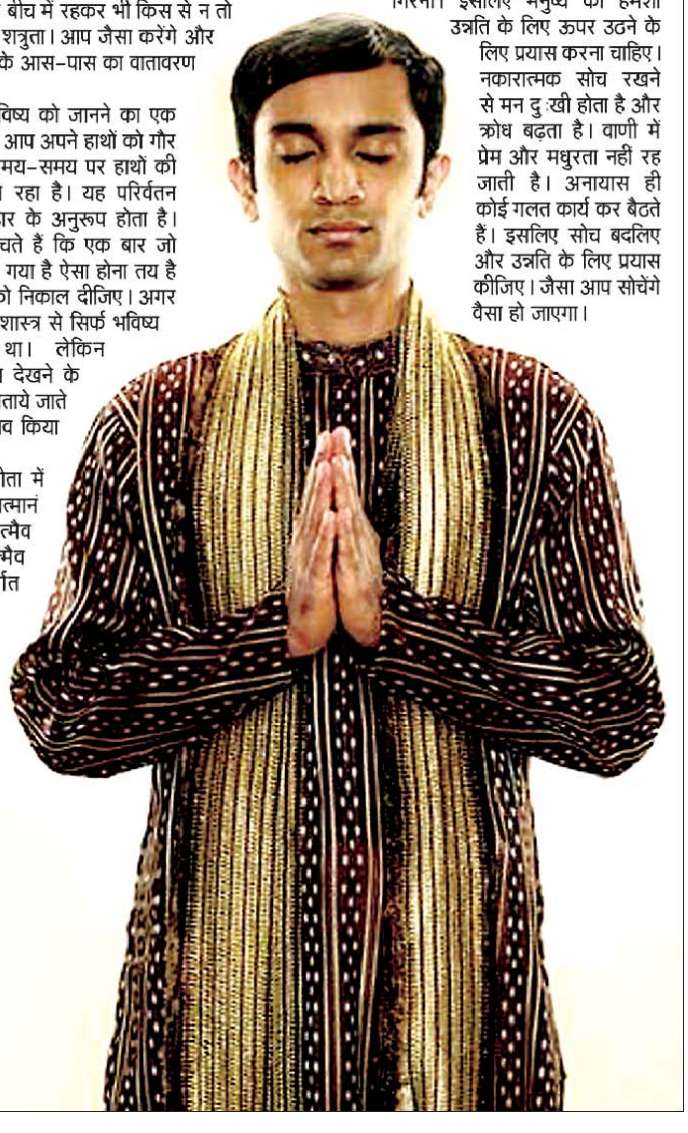

# अहंकार त्यागने वाले ही महापुरूष होते हैं

बहुत से लोग दिन-रात प्रयास करते हैं कि उन्हें किसी तरह उच्च पद मिल जाए। खूब सारा पैसा हो और आराम की जिन्दगी जियें। जब ये सब प्राप्त हो जाता है तो इसे ईश्वर की कृपा मानने की बजाय अपनी काबिलियत और धन पर इतराने लगते हैं। जबकि संसार में किसी चीज की कमी नहीं है। अगर आप धन का अभिमान करते हैं तो देखिए आपसे धनवान भी कोई अन्य है। विद्या का अभिमान है तो ढूंढकर देखिए आपसे भी विद्वान मिल जाएगा। इसलिए किसी चीज का अहंकार नहीं करना चाहिए। जो लोग अहंकार त्याग देते हैं वही महापुरूष कहलाते हैं।

महाभारत में कथा है कि दुर्योधन के उत्तम भोजन के आग्रह को ठुकरा कर भगवान श्री कृष्ण ने महात्मा विदुर के घर साग खाया। भगवान श्री कृष्ण के पास भला किस चीज की कमी थी। अगर उनमें अहंकार होता तो विदुर के घर साग खाने की बजाय दुर्योधन के महल में उत्तम भोजन ग्रहण करते लेकिन श्री कृष्ण ने ऐसा नहीं किया। भगवान श्री राम ने शबरी के जूठे बेर खाये जबकि लक्ष्मण जी ने जूठे बेर फेंक दिये। यहीं पर राम भगवान की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि उनमें भक्त के प्रति अगाध प्रेम है, वह भक्त की भावना को समझते हैं और उसी से तृप्त हो जाते हैं।

अहंकार उन्हें नहीं छूता है, वह ऊंच-नीच, जूठा भोजन एवं छप्पन भोग में कोई भेद नहीं करते। शास्त्रों में भगवान का यही स्वभाव और गुण बताया गया है। महात्मा बुद्ध से संबंधित एक कथा है कि एक बार महात्मा बुद्ध किसी गांव में प्रवचन दे रहे थे। एक कृषक को उपदेश सुनने की बड़ी इच्छा हुई लेकिन उसी दिन उसका बैल खो गया था। इसलिए वह महात्मा बुद्ध के चरण छू कर सभा से वापस बैल ढूंढने चला गया। शाम होने पर कृषक बैल ढूंढकर वापस लौटा तो देखा कि बुद्ध अब भी सभा को संबोधित कर रहे हैं। भूखा प्यासा किसान फिर से बुद्ध के चरण छूकर प्रवचन सुनने बैठ गया। बुद्ध ने किसान की हालत देखी तो उसे भोजन कराया, फिर उपदेश देना शुरू किया। बुद्ध का यह व्यवहार बताता है कि महात्मा बुद्ध अहंकार पर विजय प्राप्त कर चुके थे। बुद्ध के अंदर अहंकार होता तो किसान पर नाराज होते क्योंकि बैल को ढूंढने के लिए किसान ने बुद्ध के प्रवचन को छोड़ दिया था। शास्त्रों में अहंकार को नाश का कारण बताया गया है इसलिए मनुष्य को कभी भी किसी चीज का अहंकार नहीं करना चाहिए।

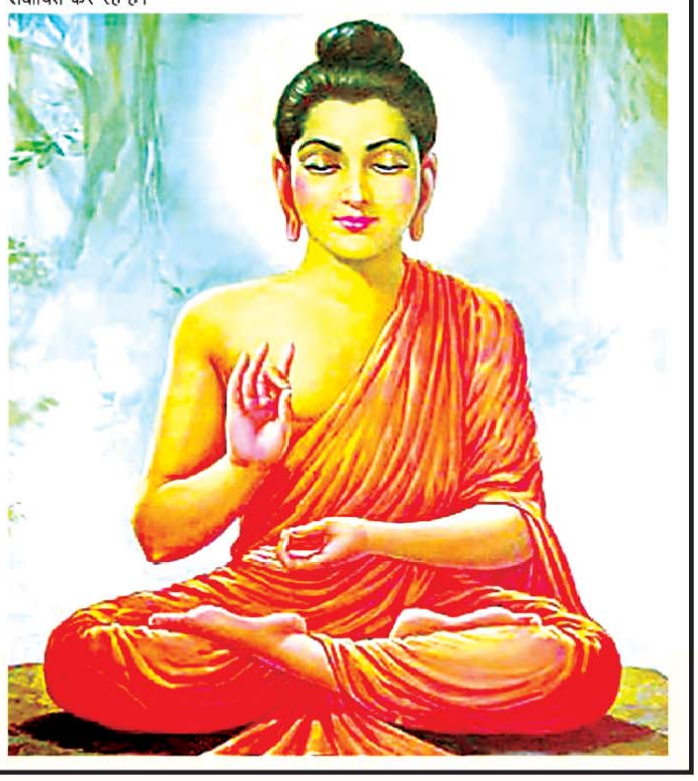

# दूसरों के अवगुण नहीं गुण भी देखिए

मनुष्यों की सामान्य प्रवृति है कि वह अपने भीतर सिर्फ गुण देखता है और दूसरों के गुणों को पहचान नहीं पाता है। यही कारण है कि मनुष्य खुद को दूसरों से श्रेष्ठ मानने की भूल कर बैठता है। जबकि गौर से देखें तो जिसे आप अयोग्य व्यक्ति मानते हैं उसमें भी कुछ न कुछ गुण अवश्य पाएंगे। अगर उन गुणों को अपने अंदर ग्रहण करने की कोशिश करें तो जिस व्यक्ति को अयोग्य मान रहे थे वह भी आपको गुणों का खजाना नजर आने लगेगा। इससे आप कई चीजें एक साथ प्राप्त कर लेंगे। एक तो उस व्यक्ति की नजर में आपका सम्मान बढ़ेगा। मन से निरादर की भावना दूर होगी और आपसी प्रेम में वृद्धि होगी। महात्मा गांधी के जीवन से जुड़ी एक ऐसी ही घटना का जिक्र यहां प्रस्तुत है जो बताता है कि किस प्रकार हमें बुराईयों में से अच्छाई को ग्रहण करना चाहिए। महात्मा गांधी इंग्लैंड की यात्रा पर थे। उस समय उन्हें एक अंग्रेज ने एक कागज पर बुरा-भला लिखकर दिया। गांधी जी ने उस व्यक्ति से कुछ नहीं कहा बल्कि कागज में लगा हुआ पिन निकालकर अपने पास रख लिया और कागज फेंक दिया। गांधी जी के साथ जो लोग थे उन्होंने गांधी जी से कहा कि अंग्रेज आपको बुरा-भला कह रहा है और आप उसे कुछ जवाब नहीं दे रहे हैं। गांधी जी ने कहा कि कागज पर लिखे हुए शब्द मेरे लिए उपयोगी नहीं थे। इसलिए मैंने उन्हें फेंक दिया। जबकि कागज में लगा हुआ पिन उपयोगी है इसलिए मैंने उसे अपने पास रख लिया है। गांधी जी ने ऐसा कह कर यह संदेश दिया कि बुराईयों को छोड़ दो और जहां कहीं कुछ भी अच्छाई दिखे उसे तुरंत ग्रहण कर लो।

# स्लम बस्तियों में रामजी के स्वागत के लिए बांटे 201 पैकेट

दैनिक पुष्पांजली टुडे

**एस एस सी ओ ने शहर की स्लम बस्तियों में दी दीपोत्सव की सामग्री**

ग्वालियर । सह सामाजिक सेवा सहयोग संस्था ( एसएससीओ ) ने रामजी के स्वागत के लिए स्लम बस्तियों में 201 दीपोत्सव की सामग्री के पैकेट वितरित किये। जिससे शहर भर में कॉलोनी ,बा?रों के अलावा स्लम बस्तियां भी रोशन हो सके।सामग्री वितरण के बारे में जानकारी देते हुए संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि जहा एक और पूरा देश राम मय है, हर जगह राम जी के स्वागत की तैयारियां जोर शोर से की जा रही है, हर व्यक्ति अपने अपने श्रदा भाव से भगवान राम को प्रसन्न करना चाहता है,इसी भावना को ध्यान में रखते हुए एस एस सी ओ के पदाधिकारियों ने आज शहर की स्लम बस्तियों में दीपोत्सव की सामग्री के 201 पैकेट जिसमे प्रति पैकेट ( 11 मिट्टी के दीपक, रुई की बत्ती, सरसो के तेल की शीशी, मिष्ठान और रंगोली ) वितरित किए, जिससे शहर बासियों के साथ साथ स्लम बस्तियां भी दीपों से रोशन हो सकें। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष श्याम श्रीवास्तव, प्रिंस श्रीवास्तव, संजय बंसल, संतोष गर्ग, अनिल कुशवाह, आयुष शर्मा, शिखा नन्नौ?, सचिन वर्मा, आयुष ठाकुर, आदि संस्था सदस्य मौजूद रहे।

## श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह का शहर के विभिन्न स्थानों पर होगा लाइव प्रसारण

**ग्वालियर।** अयोध्या में हो रहे ऐतिहासिक, अविस्मरणीय श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह का पुण्य लाभ जन-जन को मिले इसी उद्देश्य को लेकर नगर निगम ग्वालियर द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का सीधा प्रसारण दोपहर 12-00 बजे से किया जाएगा।अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लेकर देशभर को दुल्हन की तरह सजाया गया है तथा पूरे देश में भगवान श्री राम के पूजन के कार्यक्रम हो रहे हैं इसी तारतम्य में ग्वालियर में भी विभिन्न स्थानों पर बडी संख्या में भगवान श्री राम के पूजन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।इसी के साथ ही अयोध्या के श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह का पुण्य लाभ जन जन तक पहुंचाने के लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा महाराज बाड़ा, अचलेश्वर मंदिर, फूल बाग चौराहा, हजीरा चौराहा एवं आदर्श गौशाला लाल टिपारा में एलईडी के माध्यम से समारोह का सीधा प्रसारण किया जाएगा।

## चेतना मंच ने श्री अयोध्या जी धाम वैभव यात्रा का भव्य आयोजन किया

**ग्वालियर** अयोध्या जी में श्री राम लाल की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष में चेतना मंच ,मां शेरावाली माता मंदिर समिति तथा आदर्श पार्क समिति के संयुक्त तत्वाधान में भव्य *श्री अयोध्या जी धाम वैभव यात्रा* निकाली जिसमें सैकड़ो की संख्या में रहवासियों ने सहभागिता की।चेतना मंच के अध्यक्ष दीपक तोमर एवं उपाध्यक्ष डॉ अरविंद मित्तल द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार आज संपूर्ण दीनदयाल नगर शताब्दीपुरम परिक्षेत्र जय श्रीराम ,रामलाल आए हैं। के जयकारों से गुंजायमान रहा। प्रातः 10 बजे सैकड़ो की संख्या में महिलाएं पुरुष एवं युवा अटल पार्क (पुराना दशहरा मैदान) में एकत्रित हुए जहां से रथ में सवार प्रभु, श्री राम लक्ष्मण एवं मां सीता तथा हनुमान जी के पात्रों के साथ राम भजनों के साथ नाचते गाते, श्री राम के जयघोष के साथ सभी लोग मां शारों वाली माता मंदिर पहुंचे।संपूर्ण मार्ग पर यात्रा का भव्य स्वागत जगह-जगह पर किया गया।

# अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में पंजाबी समाज में उत्साह और खुशी की लहर

**श्री आदर्श रामलीला एवं पंचायत हनुमान नगर द्वारा प्राचीन हनुमान मंदिर का नव निर्माण राम आने की खुशी में राम जी की झांकी राम धुन के साथ डांडिया एवं ढोल पर नृत्य करते हुए आदर्श कॉलोनी से हनुमान मंदिर हनुमान नगर में पहुंचेंगे पंजाबी समाज के लोग**

### हनुमान मंदिर में होगा सुंदरकांड के पाठ के साथ भंडारा

ग्वालियर 21 जनवरी रविवार को अयोध्या मैं होने जा रहे श्री राम लाल की प्राणप्रतिष्ठा को लेकर पंजाबी समाज में उत्साह एवं खुशी का माहौल छा गया है आदर्श रामलीला समिति के अध्यक्ष हरिओम नागपाल हनुमान नगर पंचायत के अध्यक्ष प्रमोद पाहवा सचिव रवि बत्रा सहसचिव विजय चचडा उपाध्यक्ष सुभाष अरोड़ा एवं समाजसेवी भरत कथुरिया लाजपत नागपाल द्वारा राम आएंगे की खुशी में हनुमान नगर के प्राचीन हनुमान मंदिर का नवनिर्माण कराया गया साथ ही मनोज जुनेजा, बलदेव खुराना, रीता चचडा लता बत्रा अंजू खुराना मीना शर्मा रिचा पोपली द्वारपूरे समाज में अक्षत वितरण कर राम लला के दर्शन का आमंत्रण दिया आज 22 जनवरी सोमवार कोसमाज द्वारा आदर्श कॉलोनी से राम जी की झांकी निकालकर जिसमें महिला एवं पुरुष राम धुन पर डांडिया एवं ढोल पर नाचते गाते फलका बाजार राम मंदिर जिंसी नाला से होते हुए हनुमान मंदिर हनुमान नगर में पहुंचेंगे यहां पर सुंदरकांड के पाठ के साथ राम धुन पर खुशी मनाएंगे एवं रामलला की प्राण प्रतिष्ठा वं राम भक्त हनुमान मंदिर के नवनिर्माण के उपलक्ष में भंडारे का आयोजन रखा गया है मीडिया प्रभारी राजू पंडितने बताया कि अभी हाल ही में माधव मंगलम पैलेस में राम आएंगे हुए कार्यक्रम में पंजाबी सेवा समिति के अध्यक्ष मोहनलाल अरोरा ने आए हुए अतिथियों को श्री राम जी का चित्र एवं झंडा दिया और साथ ही श्री राम उत्सव को मानते हुए अपने-अपने घरों में दीपक जलाएं रोशनी करें और श्री राम जी का स्वागत करें मीडिया प्रभारी राजू पंडित

# विधानसभा अध्यक्ष तोमर ने किया मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक का उदघाटन

**ग्वालियर** , मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा विधानसभा अध्यक्ष तोमर ने कहा कि संजीवनी क्लिनिक सरकार की बड़ी योजना है। दरअसल यह सब को स्वास्थ्य उपलब्ध कराने की दिशा में बड़ा प्रयास है। सरकार हर व्यक्ति को स्वस्थ देखना चाहती है। वार्ड स्तर पर ही लोगों को स्वास्थ्य सुविधा मिल सके इस दिशा में यह बड़ा कदम है। अयोध्या में प्रभु श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा का अवसर सामान्य बात नहीं है। इसके पीछे 500 सालों के संघर्ष का इतिहास है। मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर आज यहां वार्ड 20 सैनिक कॉलोनी गोले का मंदिर में बनाए गए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत नगर पालिका निगम ग्वालियर द्वारा मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सभापति श्री मनोज सिंह तोमर, भाजपा जिला अध्यक्ष अभय चौधरी, पार्षद श्रीमती मंजूलता जितेंद्र सिंह, बृजेश श्रीवास सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे।इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष ने कहा भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा एक महत्वपूर्ण और पावन अवसर है। 500 वर्षों के इतिहास में हजारों साधु संतों समाजसेवियों और कार सेवकों ने अपनी जान की कुर्बानी थी। अयोध्या में मंदिर का निर्माण ईंट पत्थर से बना भवन नहीं है। इसके लिए सरयू में कई बार रक्त बहा है। उन्होंने यहां लोगों का आव्हान किया कि वह इस गौरवशाली दिन का लाभ उठाएं। 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह की अंतर्गत देशभर में हो रहे उत्सवों में भाग लें। 22 जनवरी के बाद अयोध्या जाकर प्रभु श्री राम के दर्शन करें। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा मैंने विधायक और सांसद रहते हुए कई विकास कार्यों को कराया है। हर क्षेत्र में काम करने की कोशिश की है। मेरी कोशिश रही है कि जहां भी रहूं आपका नाम ऊंचा रहे। यह सब इसलिए संभव हो सका क्योंकि आपने भारतीय जनता पार्टी को अपना आशीर्वाद दिया।

# श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में भगवान को नगर भ्रमण कराया गया

अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्री नील मौलेश्वर महादेव मंदिर, शंकरचौक, नाका चंद्रबदनी से श्री गणेशजी का पूजन कर 108 कलशों व भगवन्नाम संकीर्तन यात्रा निकाली गई । यात्रा में श्री सीताराम प्रभु को पालकी में बैठाकर नगर भ्रमण कराया गया । यात्रा आसपास के विभिन्न क्षेत्रों व गलियों में निकाली जाकर वापस श्री नील मौलेश्वर महादेव मंदिर पर आरती व प्रसाद वितरण के साथ समापन किया गया । यात्रा में क्षेत्र के भक्त प्रेमियों ने बदचढ़कर भाग लिया । इस अवसर पर मंदिर पर श्री गिरिराज महाराज की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया गया । पंडित श्री मनीष शास्त्री महाराज द्वारा संकीर्तन यात्रा की महिमा बताते हुए कहा कि नगर के वासियों के मन में इस यात्रा से भक्तिभाव उसी प्रकार जागृत हो जैसे कि भक्त प्रहलादजी द्वारा दैत्यों में एवं श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा जन जन में संकीर्तन द्वारा भक्ति भाव जगाया गया था ।कार्यक्रम में श्री जगवीर सिंह भदौरिया, मानसिंह कुशवाह, अतुल श्रीवास्तव, विकास श्रीवास्तव, महेश त्यागी, इंद्रपाल सिंह कुशवाह, हिमांशु शुक्ला, तारा सिंह, नागेंद्र कुशवाहा, राजा गायकवाड़, प्रेमनारायण साहू व रामनगर के समस्त भक्तों ने भाग लिया ।

# सिंधिया स्कूल,किला, ग्वालियर में किया गया वॉकथॉन का आयोजन

सिंधिया स्कूल,किला, ग्वालियर की ओर से पर्यावरण संबंधी मुद्दों, विशेष रूप से जल संरक्षण पर नगरवासियों का ध्यान केंद्रित करने के लिए व जल प्रदूषण कम करने के लिए जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक था ÷समाधान के लिए स्ट्राइड- बदलाव के लिए वॉकथॉन में जल योद्धाओं से जुड़ें÷ . इस पैदल मार्च में सिंधिया स्कूल के 120 विद्यार्थियों, अनेक अध्यापकों, प्रशासकीय विभाग के अनेक सदस्यों ने भाग लिया।सिंधिया स्कूल के हिंदी विभाग अध्यक्ष व मीडिया प्रभारी मनोज मिश्रा ने विद्यालय के मुख्य द्वार से झंडा दिखाकर इस वॉकथॉन की शुरुआत की। अधिकांश बच्चों के हाथ में जल बचाओ, जल को प्रदूषण से बचाव,जल ही जीवन है जैसे लिखे हुए एक अनेक संदेश थे।वॉकथॉन का मार्ग सिंधिया स्कूल, फोर्ट, ग्वालियर से शुरू होकर शिंदे की छावनी और फूलबाग से होकर गुजरा ।फूल बाग मेंवाले सेल्फी पॉइंट पर सभी बच्चे रुके, यहां यहांश्री गणपत पाठक द्वारा निर्देशित नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया, जिसमें यह दिखाया गया कि कितने प्रकार से नदियों को प्रदूषित किया जाता है और यदि यही होता रहा तो हम अपनी पीढ़ी को किस प्रकार बचा पाएंगे ? उसके बाद फिर से यह यात्रा प्रारंभ हुई और झाँसी की रानी की समाधि से होते हुए बच्चे चौपाटी तिराहे तक पहुँचे जहाँ यह यात्रा समाप्त हुई।इस अवसर पर विद्यालय के प्रशासकीय प्रभारी कर्नल ( रि. ) डी. के. फरशवाल ,श्रीमती फरशवाल, विद्यालय के अनेक शिक्षकगण उपस्थित रहे।

## राम मंदिर के साथ भाजपा चुनावी मोड में, कभी भी हो सकते हैं चुनाव

भोपाल। केन्द्र सरकार राम मंदिर का कार्य पूर्ण होने के बाद पूरी तरह से चुनावी मोड में आ सकती है। राम मंदिर के कार्य के साथ ही फरवरी में आम चुनावों की अनुशंसा कर सकती हैं। इसके बाद निर्वाचन आयोग मार्च या अप्रैल में कभी भी चुनावों की तिथियों का ऐलान कर सकता है। सूत्रों के मुताबिक केन्द्र के सभी मंत्रियों व सत्तारूढ़ भाजपा के सभी सांसदों को भी भाजपा आलाकमान ने इशारा कर दिया है कि वह ज्यादा से ज्यादा अपने संसदीय क्षेत्र में ही रहे और कार्यकर्ताओं व आम जनता से संपर्क में भी रहे। कुल मिलाकर मोदी सरकार अपने काम के बदले अब फिर जनता के बीच आम चुनावों के माध्यम से जाने की तैयारी कर रही है।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478